॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥
भारत - वीर - गौरव
रचयिता –
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज द्वारा प्रणीत ''भारत-वीर-गौरव'' ग्रन्थ का विमोचन करते हुए
श्री भैरोंसिंह शेखावत, पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *
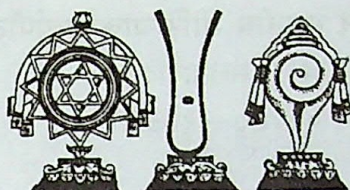
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

भारत - वीर - गौरव

रचयिता--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री श्रीजी महाराज

प्रकाशक--

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद), पुष्करक्षेत्र

किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान)

आषाढ़ शुक्ल २ (श्रीरथयात्रा महोत्सव)

वि० सं० २०५६ श्रीनिम्बार्काब्द ५०९४

पुस्तक प्राप्ति स्थान--

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

फोन नं० ०१४६७-२२७८३१

संस्करण : २००५

द्वितीयावृत्ति--

दो हजार

न्यौछावर : **१५ रुपये** (दश रुपये)

लेजर सैटिंग :-

श्रीनिम्बार्क - मुद्रणालय

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

जि० अजमेर (राज०)

मुद्रक :-

प्रिन्ट-ओ-लेण्ड

हवा सड़क, जयपुर

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥ ॥ श्रीवातात्मजो जयति ॥

समर्पण

(१)

अर्जुन-रथ-धुज-भावयुत, महावीर हनुमान ।
सर्वेश्वर श्रीकृष्णप्रभु, शुभ सारथ्य महान ॥

(२)

कुरुक्षेत्र भारत-मही, भारत समर महान ।
हनुमत बलशाली जहाँ, अविचल राजत यान ॥

(३)

सीतावल्लभ रामप्रिय,-नाम जपत अविराम ।
अतिपावन हरि भक्तिरस, करहि पान निष्काम ॥

(४)

महावीर हनुमान पद, - सरोज अर्पण आज ।
भारत-वीर-गौरव यह, लघुरूपात्मक भ्राज ॥

आषाढ़ शुक्ल ३ गुरुवार
वि० सं० २०५६
दि० १५/७/१९९९

समर्पक--
श्रीमद्धनुमद्दर्शनस्पृहापिपासु-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

सामयिक प्रेरणा--भारत-वीर-गौरव

भारतवर्ष के इतिहास से अवगत होता है कि--प्रचीन भारत में इसका धर्मकर्मनिष्ठ प्रजापालनतत्पर उन राजा महाराजा शासकों की आदर्श परम्परा रही है, जिनका विशिष्ट ऋषियों, धर्माचार्यों से कुल गुरुओं के रूप में वंशानुक्रम--घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। शासन की बागडोर भी उन कुल गुरुओं के हाथों में रहती थी, उन्हीं की प्रेरणा से धर्मानुकूल मर्यादित नियन्त्रित शासन चलता रहता था। फलस्वरूप **यथा राजा तथा प्रजा** के अनुरूप समस्त प्रजा स्वकर्तव्य निष्ठ होकर अभ्युदय एवं निःश्रेयस सिद्धि को अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर मानव जीवन को सफल करती थी। इसी कारण से संसार में भारतवर्ष धर्म प्रधान राष्ट्र कहा जाता है। यथा--

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।।

भारतवर्ष के धर्माचार्यपीठों में अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्का-चार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ एक विशिष्ट सुश्रुत अन्यतम धर्माचार्यपीठ है। यहीं के तपोनिष्ठ धर्माचार्यों का भी राजा--महाराजाओं (शासकों) से कुलगुरुओं के रूप में पारम्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। देश के धर्म के प्रचार--प्रसार के साथ--साथ शासन तन्त्र में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती थी तथा राष्ट्र की तात्कालिक विविध गति विधियों में उनका सक्रिय योगदान रहता था। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के समय में अपने ऊपर संकट झेलकर भी यह पीठ स्वतन्त्रता के लिये विषम परिस्थितियों में आश्रयदाता रही है।

यहाँ के परम पूज्य पूर्वाचार्यों की प्रशस्त पावन परम्परा में वर्तमान परमाराध्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा शिक्षा, धर्म प्रचार--प्रसार तथा राष्ट्र की तात्कालिक महत्वपूर्ण गतिविधियों में अनेक कीर्तिमान् स्थापित किये हैं ।

धार्मिक जगत् के विभिन्न धर्माचार्यों के दार्शनिक मत--मतान्तर होते हुए भी सनातन हिन्दू संस्कृति--सभ्यता की रक्षा हेतु धार्मिक संगठन में एकता की परमावश्यकता का अनुभव करते हुए समय--समय पर आपके द्वारा अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर विराट् सनातन--धर्म सम्मेलनों के आयोजन से देश के समस्त मतावलम्बी धर्माचार्यों, महामण्डलेश्वरों, सन्त--महात्माओं एवं विद्वानों को एक मञ्च पर एकसाथ विराजमान कराकर सनातन वैदिक हिन्दू धर्म की अनेकता में एकता के दर्शन कराकर एक अभूतपूर्व आदर्श स्थापित किया गया । गोरक्षा आन्दोलन में परम पूज्य आचार्यश्री की सपरिकर सक्रिय जो आदर्श भूमिका रही वह तो सर्वविदित ही है ।

साथ ही अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा सञ्चालित भारतवर्ष में स्थित अनेक प्राचीन धार्मिक स्थानों का जीर्णोद्धार विकास तथा अनेक आवश्यक नवीन प्रतिष्ठानों का निर्माण भी कराया गया ।

आचार्यश्री द्वारा निरन्तर सारस्वत साधना के अन्तर्गत अनेक महत्वपूर्ण धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय रचनाएँ संस्कृत एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रकाशित होकर साहित्य में प्रशस्त स्थान प्राप्त कर रही है ।

कुछ रचनाओं के अंश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में स्वीकृत हैं । आपके द्वारा विरचित **भारत-कल्पतरु** ग्रन्थ का विमोचन तात्कालिक उपराष्ट्रपति महामहिम शिक्षा शास्त्री श्रीशंकरदयालजी शर्मा के करकमलों से सम्पन्न हुआ, यह हमारे लिये गौरव का विषय है ।

जैसा कि ऊपर संकेत किया गया, परम पूज्य आचार्यश्री राष्ट्र के संकट के समय में आत्मीय भावना से अपने ही संकट का अनुभव करते हुए अन्तर्मन से चिन्तित रहते हुए उसके निराकरण में सर्वविध योग प्रदान करने का निरन्तर ध्यान रखते हैं । वर्तमान में कारगिल युद्ध-संकट के समय में भी आपश्री बड़े चिन्तित रहे हैं । अपने परम पावन अन्तःकरण के चिन्तन को आपने शब्द रूप प्रदान किया है, प्रस्तुत ग्रन्थ **भारत-वीर-गौरव** के रूप में । इस ग्रन्थ में प्राचीनकाल से वर्तमान तक भारत का चित्र चित्रण करते हुए वर्तमान राष्ट्र के समय में हमारे देशवासियों को सर्वतोभावेन भारत सरकार को तन, मन, धन एवं भावनात्मक योगदान करने की बलवती प्रेरणा प्रदान की गई है ।

--दयाशङ्कर शास्त्री

निम्बार्कभूषण, पुराण-साहित्याचार्य, एम. ए.

शिक्षामन्त्री-अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ शिक्षा समिति

✽ उद्‌गार ✽

भारतराष्ट्र पर गर्व के साथ शिर ऊँचा करके हँसते--हँसते बलिदान होने वाले भारतीय वीरों के अदम्य उत्साहपूर्ण तथा शत्रु--राष्ट्र पाकिस्तान से अनवरत अपरिश्रान्त युद्ध करने वाले सैनिक युवकों के शौर्य्य को जागृत करने व समुत्तेजित करने वाली भारत-वीर-गौरव नामक पुस्तिका प्रातःस्मरणीय अनन्त श्रीविभूषित जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) स्थित श्री श्रीजी महाराज के कर-कमलों द्वारा प्रणीत दृग्गोचर हुई ।

यद्यपि पुस्तक का कलेवर अनति दीर्घ होते हुये भी अत्यन्त ओजपूर्ण सारगर्भित होने के कारण तथा राष्ट्र जागृति परक होने के कारण भी प्रत्येक भारतीयजन के लिये पूर्णतया उपादेय है ।

इसके पठन--मनन से निरन्तर राष्ट्र तत्पर वीरों एवं नवयुवकों के हृदय में राष्ट्ररक्षण भावना व नवजागृति तथा अद्‌भुत स्फूर्ति का प्रादुर्भाव होगा यह सर्वथा निरतिशयोक्ति पूर्ण है । इसलिये यह प्रयास अत्यन्त प्रशंसनीय एवं समुचित साहसवर्धक होने के कारण सदैव स्तुत्य रहेगा ।

श्री श्रीजी चरणचञ्चरीक--

सत्यनारायण शास्त्री

अजमेर

भारत-वीर-गौरव स्वाभाविक हार्दनाद

भारत शक्ति और भक्ति का देश है । धर्म और देश किसी भी एक सम्प्रदाय जाति वर्ग की वपौती नहीं हैं । जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज द्वारा रचित **भारत-वीर-गौरव** पुस्तक एक ऐसे धर्माचार्य का स्वाभाविक हार्दनाद है जो निरन्तर धर्मचिन्तन, साहित्य सर्जन में संलग्न हैं । आचार्यश्री स्वयं भारत का गौरव और आध्यात्मिक शक्ति व भक्ति के मूर्तिमान् स्वरूप हैं । भारत-वीर-गौरव में विभिन्न १७६ पद रचनाओं के द्वारा त्रेतायुग से वर्तमान में कारगिल युद्ध के वीरों के सम्मान में आदराञ्जलि अर्पित की गई है । वीरों के सम्बन्ध में धार्मिक पुरुष पुस्तकें कम लिखते हैं और लिखते हैं तो निश्चितरूप से उस पुस्तक की मान्यता बनती है । श्री श्रीजी महाराज जैसे धर्माचार्य द्वारा लिखित इस पुस्तक की अधिक महत्ता है । प्रस्तुत ग्रन्थ देशवासियों के मन में राष्ट्र के प्रति प्रेम व स्वाभिमान एवं स्वाभिमान जगाने वाला सिद्ध होगा । देशवासियों में स्वाभिमान एवं राष्ट्रप्रेम होगा तो साधनों के बिना भी युद्ध में जीत हो सकती है । यह ग्रन्थ उन भारत मां के सपूतों के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि है, समस्त वीरों का स्मारक है । जो मातृभूमि के लिए शहीद हुए हैं । ऐसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ का विमोचन व लोकार्पण करते हुए मैं महान् गौरव का अनुभव करता हूँ । आचार्यश्री ने अपनी सहज उदारता से इसका श्रेय मुझे प्रदान किया है एतदर्थ आचार्यश्री के प्रति भूरि-भूरि कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ । भविष्य में भी आपश्री इसी प्रकार के प्रेरणाप्रद सत्साहित्यों से देशवासियों का मार्ग दर्शन कराते रहेंगे इन्हीं भावनाओं के साथ श्रीचरणों में शत-शत नमन करता हूँ ।

--भैंरोंसिंह शेखावत

पूर्व मुख्यमन्त्री-राजस्थान सरकार, जयपुर

* वीररस का सत्साहित्य *

दीपे वारां देश, ज्यारां साहित जग मगे लोकोक्ति का व्यावहारिक स्वरूप परम पूज्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज द्वारा रचित भारत-वीर-गौरव ग्रन्थ से प्रदर्शित हो रहा है । भारत की जय भूमि, मातृभूमि की रक्षार्थ शौर्यपूर्ण प्रदर्शन कर एवं प्राणों की आहुति देकर शूरवीरों ने जहाँ इतिहास रचा है, वहीं परम पूज्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज ने शूर वीरता का साहित्य सृजन कर राष्ट्रहित का श्रेष्ठ कार्य किया है । इस ग्रन्थ में शूरवीरों एवं महापुरुषों के सुकृत्यों का काव्य एवं उसके सरलार्थ द्वारा गौरवमय परिचय दिया गया है । हाल ही में हुये कारगील युद्ध का भी प्रेरणादायक वर्णन अत्यधिक श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत हुआ है । यह ग्रन्थ जहाँ एक ओर प्रेरणा देगा वहीं साहित्य के विद्यार्थियों के लिये वीर-रस का संदर्भ ग्रन्थ का कार्य करेगा । सत्साहित्य सृजन हेतु श्री श्रीजी महाराज के चरणों में वन्दन ।

--ओंकारसिंह लखावत

सांसद (राजस्थान)

दिल्ली

भारत-वीर-गौरव - एक समीक्षा

जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरण-देवाचार्य श्री श्रीजी महाराज द्वारा रचित एवं राजस्थान के गौरव पूर्व--मुख्यमन्त्री श्रीभैंरुसिंहजी शेखावत द्वारा विमोचित भारत-वीर-गौरव पुस्तक का अवलोकन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ । भारत माँ के भाल काश्मीर के कारगिल को विदेशी पाकिस्तान घुसपैठियों से खाली कराने के अघोषित युद्ध में प्राणों की बाजी लगाकर शहीद होने वाले भारत माँ के लाडले वीर एवं साहसी जवानों के अद्भुत बलिदान से प्रभावित होकर श्री श्रीजी महाराज गद्गद् एवं द्रवित हो उठे और राष्ट्र रक्षा की खातिर किये गये जवानों के बलिदान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने तथा जनजागरण में भी बहादुर सैनिकों के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान तथा देशभक्ति के भाव जागृत करने हेतु इस पुस्तक की रचना की ।

इस पुस्तक में श्री श्रीजी महाराज ने अपने अन्तःकरण की गहराइयों से भाव--विभोर होकर भावाभिव्यक्ति की है और इस लघु लेख पुस्तिका में गागर में सागर भर दिया है । वैदिककाल से लेकर आज तक हमारे देश की जो सांस्कृतिक महानता और वीरों को जन्म देने वाली जो गौरवमयी परम्परा रही है उसका अद्यतन दर्शन इस पुस्तक में आचार्यश्री ने करवाया है । इस पुस्तक में माँ भारती के महान् सपूत

राष्ट्रवीर, धर्मवीर, दानवीर, दयावीर, युद्धवीर, कर्मवीर सबकी सहज अभिव्यक्ति एवं सरल छन्द के माध्यम से स्वाभाविक चित्रण किया है- मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, वीर हनुमान, पाण्डव, शिवाजी, महाराणा प्रताप, नेताजी सुभाष, सावरकर, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, महात्मा गाँधी, डा० राजेन्द्रप्रसाद, लालबहादुर शास्त्री, अटलबिहारी वाजपेयी आदि वीरों का स्मरण कर उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए देश की नई पीढी को इनसे प्रेरणा लेने का आह्वान किया है । कारगील युद्ध के अमर रणबांकुरों के यशस्वी बलिदान का भी बड़े श्रद्धा से स्मरण किया है । संसार का उपभोग बहादुर लोग ही कर सकते हैं । **वीरभौग्या वसुन्धरा** के कथन को चरितार्थ किया है ।

यह पुस्तक २५ वीं रचना है । सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिवेश में राष्ट्रवाद की जनक यह पुस्तक है । इस स्तुत्य लेखन कार्य के लिए श्रद्धेय श्री श्रीजी महाराज को शतशत बधाई एवं साधुवाद प्रस्तुत करते हैं ।

--प्रो० रासासिंह रावत
पूर्व संसद सदस्य (लोकसभा)
दिल्ली

✻ देश प्रेम से प्रेरित अनूठा ग्रन्थ ✻

भारत - वीर - गौरव

परम पूज्य अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज ने भारत वीर गौरव नामक दोहावली ग्रन्थ की रचना देश प्रेम से प्रेरित होकर की है यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य में अनूठा ग्रन्थ होगा जो भारतवर्ष का गौरव बढायेगा ।

यह ग्रन्थ प्रभु भक्ति और देश भक्ति से ओत--प्रोत है । ग्रन्थ में प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के वीर पुरुषों की सुन्दर गाथा है जो जन--जन के मानस में देश भक्ति का संचार करेगी ।

--डा० गुणवन्तसिंह झाला

सर्जन, अजमेर

भारत-वीर-गौरव का स्वरूप

भारतवर्ष की अनुपम महिमा है इसके माहात्म्य का सुविस्तृत परिवर्णन श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि सम्पूर्ण शास्त्रों में विद्यमान है। विधि-शिव-पुरन्दर-गन्धर्व-किन्नरादि सुरवृन्दों द्वारा इस भारत की पावन वसुधा सर्वदा अभिवन्दित है । समस्त ऋषि-मुनि--साधु--सन्तजन--धर्माचार्यवर्य इस पवित्र धरित्री का सर्वदा मंगल-गान करके परम सौभाग्य का अनुभव करते हैं । गंगा-यमुना-कृष्णा-कावेरी-गण्डकी-सरयू-क्षिप्रा-गोदावरी-चन्द्रभागा-पार्वती-वेत्रवती-चर्मणवती-सरस्वती-नन्दा-प्राची-साभ्रमती आदि विविध पुण्य-सलिलाओं के कल-कल निनाद से यह भारतदेश परमगुञ्जायमान एवं अतिशय सुरम्य है । यहाँ पर चारों धाम, सप्तपुरियाँ, द्वादश ज्योति-र्लिङ्ग एवं श्रीभगवद्धाम श्रीवृन्दावन, व्रजमण्डल एवं कोटि-कोटि यावन्मात्र तीर्थस्थल सुशोभित हैं । पुष्कर, पयाग, काशी, अयोध्या का दिव्यतम स्वरूप सभी को परमानन्द प्रदान करता है । वस्तुतः ऐसी अतिशय सुपावन सुरम्य भारत-वसुधा का वर्णन अपनी प्राकृत वाणी किंवा लेखनी का विषय ही नहीं है । श्रीमद्भागवत के इस वचन से भारतवर्ष के स्वरूप का दर्शन स्पष्ट है,--

कल्पायुषां स्थानजयात्पुनर्भवात् क्षणायुषां भारतभूजयो वरम् ।
क्षणेन मर्त्येन कृतं मनस्विनः सन्यस्य संयान्त्यमयं पदं हरेः ॥

उत्तमोत्तम स्वर्गलोकादि तो क्या--जहाँ पर सतत रहने वाले सुरवृन्दों के एक--एक कल्प का आयुर्मान है । किन्तु जिस अनुपम लोक से इस भवार्णव में आते हैं इस प्रकार ब्रह्मलोक आदिक दिव्य लोकों की विशेषता से अधिक भारतवर्ष की पवित्र वसुधा धाम पर

स्वल्पायु में भी रहते यहाँ जन्म प्राप्त करना परम श्रेष्ठतम है । क्योंकि श्रेष्ठ-पुरुष पल मात्र में ही पञ्चभूतात्मक प्राकृत शरीर से किये जाने वाले सत्कर्म सर्वेश्वर श्रीहरि के समर्पित कर उनके सर्वोच्च दिव्यतम मंगलमय सान्निध्य प्राप्त करने में समर्थ हो सके ।

वस्तुतः इस प्रकार भारत का स्वरूप उसका लोकोत्तर माहात्म्य अनिर्वचनीय है । ऐसे ही भारत की वीर-वसुधा पर अगणित वीर महा-पुरुषों ने प्रकट होकर इसकी विविध संकटकालिक स्थिति में इसकी सर्वात्मना समग्ररूप से सुरक्षार्थ मनसा, वाचा, कर्मणा सेवा-सम्पादित करते हुए आवश्यकता पड़ने पर अपने आपको भी सहर्ष सगौरव समर्पित किया है । जब-जब भी भारत पर आसुरी शक्तियों का प्रबल झञ्झावात उपस्थित हुआ तब-तब यहाँ के उत्तमोत्तम वीर श्रेष्ठों ने उनका परिहार, उनका विनाश किया है । सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग इन प्रत्येक युगों में आसुरी शक्तियों ने भारत पर उत्पात मचाया है । जिसके परिशमनार्थ सर्वनियन्ता सर्वेश्वर स्वयं राम, कृष्ण रूप में किंवा अपने नित्य दिव्य पार्षदों द्वारा इस भूतल पर उन्हें भेजकर संकट का निवारण कराया है, श्री मद्भगवद्गीता के इन दिव्य वचनों से स्पष्ट है--

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्त्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ।।

यथार्थ में वे परम कृपामय प्रभु अपने इस दृढ़-संकल्प के अनुसार स्वयं अथवा अपने पार्षदों द्वारा अपने स्वकीय वचन द्वारा निर्दिष्ट कार्यों को सम्पादित करते हैं ।

सम्प्रति भारत की धरा पर इस समय भी घोर संकट पाकिस्तान द्वारा उपस्थित हुआ है । भारत के उत्तरांचल में कारगिल के हिमाच्छादित क्षेत्र में विपरीत शत्रु ने भारत की निर्धारित नियन्त्रण रेखा में प्रवेश कर उस पर अपना आधिपत्य करते हुए सामरिक शस्त्रास्त्रों से युद्ध प्रारम्भ कर दिया जिसके फलस्वरूप हमारी भारतीय सेना के श्रेष्ठतम वीर योद्धाओं के समक्ष भीषण संकट उपस्थित हो गया । किन्तु यहाँ के वीरवरेण्य योद्धाओं ने अद्भुत शक्ति-सम्पन्न वीरों ने अपने प्रबल अस्त्रों का प्रयोग कर शत्रु को परास्त किया और अपने क्षेत्र को उनसे मुक्त करा लिया । इस भीषण समर में अनेक भारत के विभिन्न प्रान्तों के मुख्यतः राजस्थान के वीरों ने युद्धकाल में अपने प्राणों की आहुति कर वीरगति को प्राप्त हुए । ऐसे वीरों के गौरवपूर्ण वृत्त अवगत कर पूरे देश ने महान् गौरव का अनुभव किया । वस्तुतः उन्हीं की पवित्र-स्मृति में यह **भारत-वीर-गौरव** ग्रन्थ का स्वरूप प्रस्तुत है । रथयात्रा महोत्सव के पावन पर्व पर इसका प्रकाशन और आज रथयात्रा के द्वितीय दिवस तृतीया गुरुवार को राजस्थान के परम सम्मानास्पद पूर्व मुख्यमन्त्री श्रीभैरोंसिंहजी शेखावत के द्वारा विमोचन एवं समर्पण समारोह सम्पन्न हो रहा है । जो अत्यन्त आदर्शरूप है । भारत के वीर महानुभाव एवं धीर पुरुषजन तथा धर्मप्राण भावुक भक्तजन ने इस लघुरूपात्मक ग्रन्थ से कुछ भी प्रेरणा प्राप्त की तो हम अतीव आनन्द का अनुभव करेंगे । अन्त में सर्वनियन्ता श्रीसर्वेश्वर प्रभु एवं उन्हीं के भक्ताग्रगण्य भक्त शिरोमणि श्रीहनुमान्जी महाराज के पावन चरणारविन्दों में सश्रद्ध अभ्यर्थना है कि आपके ही पदाम्बुजों में हमारा यह मन मधुकर प्रवृत्त होता रहे ।

श्रीराधासर्वेश्वरकृपापिपासु--

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

भारत-वीर-गौरव की अकारादि क्रम से

❋ दोहा - सूची ❋

ग्रन्थ विमोचन

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज द्वारा विरचित भारत-वीर-गौरव नामक ग्रन्थ का विमोचन आषाढ़ शुक्ल ३ गुरुवार वि० सं० २०५६ दिनांक १५/७/१९९९ को राजस्थान के पूर्व मुख्यमन्त्री श्रीभैरोंसिंहजी शेखावत द्वारा अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के विशालतम वाह्य--प्राङ्गण में अपार जनसमूह के मध्य भव्यतम--समारोह के साथ सम्पन्न हुआ । उक्त ग्रन्थ का भारत के उत्तराञ्चल के कारगिल--क्षेत्र में चल रहे युद्ध में देश के प्रति अपने प्राणों को समर्पित करने वाले वरेण्य--वीरों की पावन-स्मृति में आचार्यश्रीचरणों द्वारा प्रणयन हुआ । इस ग्रन्थ में गागर में सागर की भाँति प्राचीन चतुर्यग के क्रमानुसार वीरों का सांकेतिक वर्णन हुआ है । जो देशनिष्ठ वीरजनों एवं सभी भारतीय जन--मानस के लिये परम प्रेरणाप्रद रहेगा । यह ग्रन्थ आद्योपान्त परम मननीय है ।

भैरोंसिंह

15/7/99

भारत-वसुधा जय-जय करिये ।
शुभ-धरणी यह-वसन्त वीर हैं, नशत शत्रुजन जय उच्चरिये।।
देश-काज हित निज तन अर्पित, घोर समर कर भव निस्तरिये।
सकल-प्रान्त के वीरवरों ने, शत्रु हताहत कर पुनि लरिये ।।
इनका अनुपम सुयश देश में, गायन कर-कर अन्तर भरिये ।
मरूभूमि यह वीर--सुपावन, वीरमातृजन अर्चन करिये ।।
इष्ट ध्यान कर समराङ्गण में, प्रबल रूपतम अस्त्र-संचरिये ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, वीर--भावना मानस धरिये ।।

वीर-धरा यह भारत धरणी ।
इसकी महिमा गावत सुरगण,
वेद-भनत नित भव-निस्तरणी ।।
ऋषि-मुनि-प्रतिपल गावत नित यश,
वीरवृन्द-बल वर्द्धन - करणी ।
धनञ्जयनन्दन अभिमन्यु की,
वीर--अवनि शह शौर्य-वितरणी ।।
इस वसुधा के सकल वीरवर,
मातृ भूमि हित तन-सञ्चरणी ।
शरण सदा राधासर्वेश्वर,
पुनि-पुनि जय हो वीर-विचरणी ।।

* श्रीराधासर्वेश्वरो जयति *

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

अनन्त श्रीविभूषिल जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर--

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री श्रीजी महाराज विरचित--

भारत-वीर-गौरव

राधासर्वेश्वरं ध्यात्वा निम्बार्कश्चाऽऽयुधं हरेः ।

आञ्जनेयं हृदि स्मृत्वा महावीर-शिरोमणिम् ॥१॥

श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् एवं भगवान् श्रीसर्वेश्वर श्रीकृष्ण के करकमलों में सर्वदा सुशोभित चक्रराज श्रीसुदर्शन के अवतार आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्काचार्यश्री का मङ्गल ध्यान करके एवं समस्त वीरों मे परम शिरोमणि अञ्जनिकुमार श्रीहनुमान्जी महाराज का अपने हृदय में स्मरण करने के अनन्तर ॥१॥

श्रीमद्गुरोः पदाम्भोजं जगत्तापनिवारकम् ।

*प्रणम्य तन्यते हृद्यं **भारत-वीर-गौरवम्** ॥२॥*

सम्पूर्ण चराचर जगत् के यावत्-तापपुञ्ज उसके निवारण करने वाले अपने श्रीगुरुदेव अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज के पावन श्रीमच्चरणाम्बुज युगलों में साष्टाङ्ग प्रणंतिपूर्वक अभिनमन करके सकल हृदयग्राही सत्प्रेरणादायी भारत-वीर-गौरव नामक ग्रन्थ की मंगलमयी रचना का शुभारम्भ करते हैं ॥२॥

(१)

जय हो भारतवर्ष की, जिसका सुयश अपार ।
निगमागमादिशास्त्र में, वर्णन "शरण" निहार ॥

श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि संस्कृत वाङ्मय शास्त्रों में जिसका पावन स्वरूप प्रतिपादित है । जिसका सुयश अतिशय अपार-अनिर्वचनीय है ऐसे दिव्यतम भारतवर्ष की सर्वदा जय हो । ऐसे अतीव मङ्गलमय परम पुण्यमय भारतदेश (राष्ट्र) का दर्शन-निवास कर स्वयं के जीवन को चरितार्थ करें ॥१॥

(२)

ऋषि-मुनि-योगी-सन्तजन, धर्माचार्य महान ।
भारत-महिमा अनवरत, "शरण" करत शुभ गान ॥

परम तपोधन ऋषि--मुनीश्वर-सन्तमहात्मावृन्द-विभिन्न सम्प्रदाय के मूर्द्धन्य महान् धर्माचार्यप्रवर जिस भारत की अनुपम महिमा का उसके अतुलनीय महा-माहात्म्य का पुलकित हृदय से निरन्तर मंगलमय गान करते हैं ॥२॥

(३)

अखण्ड भारतवर्ष का, रक्षण विधिवत होय ।
तन-मन-धन अर्पण करै, "शरण" संकल्प संजोय॥

इस परम अखण्ड स्वरूप भारतवर्ष का मनसा, वाचा, कर्मणा पूर्णतया इसका संरक्षण हो तथा तदर्थ रक्षार्थ तन, मन, धन आदि का सश्रद्ध न्यौछावर करने हेतु दृढ-संकल्प की भावना जन-जन में जागृत होना नितान्त आवश्यक है ॥३॥

(४)

अपने पावन देश का, रक्षण हित हो कार्य ।
यह कर्तव्य महान् है, "शरण" परम अनिवार्य ।।

अपने इस परम पुनीत भारत राष्ट्र की सुरक्षा हेतु विभिन्न रूप से सम्पदा, अन्न-वस्त्रोत्पादन, नाना वैज्ञानिक सम्प्रसाधन, सैनिकबल, औद्योगिक संस्थान, शस्त्रास्त्र निर्माण आदि विविधात्मक कार्यों का सम्पादन हो । यह अत्यन्त महान् परम अनिवार्य कर्तव्य है । इस कार्य को सम्पादित करने हेतु समवेत शक्ति नितान्त आवश्यक है ।।४ ।।

(५)

श्रीहरि भारतवर्ष में, लेते हैं अवतार ।
दुष्ट-दमन हित वे प्रभू, "शरण" शस्त्र कर-धार ।।

इस भारतवर्ष की अत्यन्त परम सुरम्य धरित्री पर श्रीमद्भगवद्-गीता के --**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ! । अभ्यु-त्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।। परित्राणाय साधूनां विना-शाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ।।** इस भगवद्वचनानुसार कभी मर्यादा पुरुषोत्तम राघवेन्द्र श्रीराम रूप में तो कभी लीलापुरुषोत्तम वृन्दावननिकुञ्जलीलाविहारी आनन्दकन्द नन्दनन्दन वासुदेव श्रीकृष्ण के रूप में तो श्रीनृसिंह, श्रीवाराहस्वरूप में अवतीर्ण होकर सन्त-गो-विप्र-भक्तजनों के परिताप का निवारण एवं अत्याचारी दुरितजनों का कभी अपने करकमलस्थ आयुधराज श्रीसुदर्शनचक्र से तो कभी अपने दिव्य वाण हस्ताम्बुज में धारण कर उनसे परिशमन करते हैं ।।५ ।।

(६)

दिव्य-हिमालय धवलिमा, शोभित भारतवर्ष ।
जिसकी पावन अवनि पर, "शरण" तीर्थ उत्कर्ष ।।

यह भारतवर्ष सकलशैल-शिरोमणि दिव्य हिमालय की अनिर्वचनीय अद्‌भुत अनुपम धवलिमा शुभ्रछटा से इतना अतिशय सुशोभित है जिसकी सुपावन पुण्यमयी भूमि पर अगणित तीर्थों का उत्कर्ष अर्थात् श्रेष्ठत्व प्रत्यक्ष है ऐसे महामनोहर भारत का लोकोत्तर स्वरूप विद्यमान है ।।६।।

(७)

तीर्थरूप है यह भारत, चारों धाम महान ।
गङ्गा-यमुना-गण्डकी, "शरण" प्रचुर सम्मान ।।

वस्तुतः यह समग्र भारत तीर्थ स्वरूप ही है । जहाँ पर चारों दिव्यधाम श्रीजगन्नाथपुरी, द्वारका, बद्रीनारायण, रामेश्वर परिशोभित है। गंगा-यमुना-सरस्वती-कृष्णा-कावेरी-गोदावरी-सरयू-क्षिप्रा--चन्द्रभागा--मन्दाकिनी--वेत्रवती--चर्मणवती--साभ्रमती आदि विविध पुण्यतोया सुभग पावन सरितायें जहाँ पर अविरल रूपेण प्रवाहित हैं और जिनका इस भारत वसुधा पर अपरिमेय सम्मान होता है ।।८।।

(८)

वृन्दावन--मथुरापुरी, सुभग अयोध्या धाम ।
शोभित भारतवर्ष में, "शरण" सश्रद्ध प्रणाम ।।

जिस भारत की अवनि पर सर्वोपरिधाम श्रीवृन्दावन विद्यमान हो, मथुरापुरी, का मंगल-दर्शन सुलभ हो पुरीवरेण्य श्रीअयोध्याधाम की दिव्य छटा दृग्गोचर होती हो ऐसे परम मंगल स्वरूप भारतवर्ष को

मनसा, वाचा, कर्मणा, श्रद्धापूर्वक कोटि--कोटि प्रणाम--पुष्पाञ्जलि समर्पित करते हैं ॥८॥

(९)

सप्तपुरी शोभित जहाँ, वन्दन आठों याम ।
द्वादशज्योतिर्लिङ्ग हैं, "शरण" कोटि प्रणाम ॥

भारत की अति रमणीय भूमि पर सप्तपुरियाँ जहाँ परम शोभायमान है । **अयोध्या[१]--मथुरा[२]-माया[३]--काशी[४]--काञ्ची[५]--अवन्तिका[६] ।पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः** ॥ अयोध्या, मथुरा, माया--अर्थात् हरिद्वार, काशी, काञ्ची, उज्जयिनी, (उज्जैन), द्वारका ये सात पुरियाँ सर्वदा मोक्ष प्रदान करने वाली हैं तथा जहाँ द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग भी विद्यमान है यथा--सौराष्ट्रे सोमनाथं[१] च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्[२] । उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारं[४] परमेश्वरम् ॥ केदारं[५] हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीम६शङ्करम् । वाराणस्यां च विश्वेशं[७] त्र्यम्बकं[८] गौतमीतटे ॥ वैद्यनाथं[८] चिताभूमौ नागेशं दारुकावने । सेतुबन्धे च रामेशं[११] घुश्मेशं[१२] च शिवालये ॥ अर्थात् १. सौराष्ट्र (काठियावाड) में श्रीसोमनाथ, २. श्रीशैल पर श्रीमल्लिकार्जुन, ३. उज्जैन में श्रीमहाकालेश्वर ४. नर्मदा के मध्य--श्रीओंकारेश्वर, ५.केदार हिमालय में श्रीकेदारनाथ, ६. डाकिनी स्थल पर-श्रीभीमशंकर, ७. काशीपुरी में-श्रीविश्वनाथ, ८. गोदावरी उद्गम स्थल नासिक में-श्रीनागेश्वर, ९. चिताभूमि में-श्रीवैद्यनाथ, १०. दारुकावन में-श्रीनागेश्वर, ११.सेतुबन्ध पर-श्री रामेश्वर, १२.शिवालय में-श्रीघुश्मेश्वर, इस प्रकार ये द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग हैं जिनका वर्णन विस्तृत रूप से श्रीशिवपुराण में है । यहाँ हम सप्तपुरियों एवं द्वादशज्योतिर्लिङ्गों को सश्रद्ध प्रणाम अर्पित करते हैं ॥९॥

(१०)

पुष्कर - तीर्थ गुरुप्रवर, काशी - दिव्य प्रयाग ।
हरिद्वार राजत जहाँ, "शरण" सुभारत भाग ।।

इसी भारत की पुनीत धरा पर कोटि-कोटि तीर्थों के गुरु पद पर प्रतिष्ठित रहने वाले युगादि तीर्थ श्रीपुष्कर--जहाँ जगत्स्रटा भगवान् श्रीब्रह्मदेव विराजमान हैं एवं श्रीवाराणसी (काशी) जो भगवान् विश्वनाथ की सुरम्य स्थली है । यावन्मात्र समस्त तीर्थों के वन्दनीय तीर्थराज श्रीप्रयागराज सुशोभित हैं । गंगा--यमुना--सरस्वती के त्रिवेणी का संगम और महाकुम्भपर्व का केन्द्र है तथा भारत उत्तरांचल में हरिद्वार भी जो महाकुम्भपर्व का स्थल है जहाँ पुण्य सलिला भगवती भागीरथी श्रीगंगा अपनी उत्ताल तरंगों से समुच्छलित होती हुई अविरल रूप से प्रवाहित होती हुई अगणित भावुक भक्तों को श्रीहरि--सान्निध्य प्रदान करती है ऐसे अति दिव्यतम इस भारतवर्ष के सौभाग्य का किन शब्दों में वर्णन करें ।।१०।।

(११)

नासिक अनुपम अवन्तिका, दर्शन दिव्य महान ।
चार कुम्भ के सुभग स्थल, 'शरण' करहि नित ध्यान ।।

भारत वसुन्धरा पर सर्वदा विद्यमान नासिक तीर्थ जहाँ पर श्रीगोदावरी की दिव्य धारा अगाधरूप से सम्प्रवाहित है जो कुम्भ का पावन धाम है, श्रीत्र्यम्बकेश्वर भगवान् के सुभग दर्शन है ऐसे अनुपम दिव्य तीर्थों का अपने हृदय से प्रतिपल हम ध्यान करें समय-समय पर मंगल--दर्शनों से परम लाभान्वित हों मानव जीवन की इसी में परम सार्थकता है ।।११।।

(१२)

पावन भारत अवनि पर, विहरत राधाकृष्ण ।
व्रज-वृन्दावनधाम में, "शरण" दरश अभितृष्ण ।।

भारत की अति मनोहारी धरा पर व्रजमण्डल के अतिशय सुरम्य क्षेत्र में कल-कल कल्लोलिनी कलिन्दजा श्रीयमुना के सुभग सुरम्य तट पर महामञ्जुललावण्यस्वरूप श्रीवृन्दावनधाम के कमनीय कुञ्ज-निकुञ्जों में विहार करते हुए श्रीवृन्दावननवनिकुञ्जविहारी सर्वनियन्ता सर्वाधार सर्वद्रष्टा सर्वान्तरात्मा सर्वकारणकारण जगद्बीज विधि-शिव-पुरन्दरादिसुरवृन्द-समाराध्य वृन्दावननवनिकुञ्जसखीजन-परिसेवित युगलकिशोर सर्वेश्वर श्यामाश्याम श्रीराधाकृष्ण भगवान् के मञ्जुल--कुञ्जों में कमनीय रूप--माधुरी के मधुर-दर्शनों की प्रबल आकाँक्षा जागृत हो ।।१२।।

(१३)

व्रजमण्डल मथुरापुरी, वरसाना नंदगाँव ।
गोवर्धन गिरिराज का, "शरण" प्रबल प्रभाव ।।

व्रजमण्डल में मथुरापुरी की अनिर्वचीय शोभा है, जहाँ श्री यमुनाजी की परम मनोरम धारा अविरलरूप से प्रवाहित है । इसी प्रकार आनन्दकन्द नन्दनन्दन सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की परमाह्लादिनी शक्ति नित्यनिकुञ्जेश्वरी सर्वेश्वरी श्रीराधा का अवतरण स्थल वृषभानुपुर वरसाना है तथा जिसके अति निकटतम नन्दगाँव है जो सकल जगन्निया-मक सर्वज्ञ सर्वेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् के बाल--लीला विलास का सुभग स्थल है । और समीप में ही जिन्हें श्रीहरि ने अपने वामकरारविन्द की कनिष्ठांगुलि में जिन्हें धारण कर देवराज इन्द्र द्वारा व्रज में महावृष्टि के

प्रबल प्रकोप से सुरक्षा की थी वही गिरिराज गोवर्धन जिनका अतुल प्रबल प्रभाव है ऐसे समस्त व्रजमण्डल की जय हो ॥१३॥

(१४)

सुभग अयोध्या शुभ पुरी, शोभित सीताराम ।
सरयू कल२ ध्वनि करत, "शरण" प्रणति अविराम॥

श्रीअयोध्यापुरी की अवर्णनीय महिमा है, इसका अमित सौन्दर्य लावण्य अनुपम है, जहाँ पुण्यतोया सरयू अपनी कल-कल मधुर ध्वनि से समस्त दिशाओं को अभिगुञ्जायमान किये हुए हैं । ऐसी इस अति कमनीय पुरी में राजीवलोचन नयनाभिराम सर्वेश्वर सर्वाधार राघवेन्द्र श्रीराम जगज्जननी श्रीजानकीजी सहित श्रीकनकमहल में विराजमान हैं, इन परमकरुणार्णव प्रभु के पावन पदाम्बुजों में प्रणति पूर्वक निरन्तर अभिनमन करते हैं ॥१४॥

(१५)

विधि-शिव-इन्द्रादि देवगण, प्रणमत भारतवर्ष ।
इसकी वसुधा सुभग रज, 'शरण' लसत अभितर्ष ॥

ब्रह्मा-शिव-इन्द्रादि देव समूह द्वारा यह भारतवर्ष सर्वदा अभिवन्दित है । ये सुरवृन्द अनवरत इसकी दिव्य-महिमा का गान कर स्वयं को परम सौभाग्यशाली मानते हैं । और भारत वसुधा की सुभग पावन रज को अपने शिर पर धारण करने को प्रतिपल अत्यन्त आतुर रहते हैं ॥१५॥

(१६)

करो निरन्तर वन्दना, करो निरन्तर वास ।
करो निरन्तर भावना, "शरण" मिटत संत्रास ॥

ऐसे अतीव पावनतम भारतवर्ष की हम समग्रविधा से अभि-वन्दना करते हैं । इसके कमनीय--क्रोड में अविचल रूप से निवास करते हुए उसकी अपने हृदयस्थल में सतत मङ्गलमयी भावना करें, जिससे हमारे जन्म-जन्मान्तरों के पातक-पुञ्ज एवं समस्त त्रिविध-तापों का परिशमन हो ॥१६॥

(१७)

ऋषि-मुनि-साधु-सन्तजन, वैष्णव करत निवास ।
भारत-वसुधा नमन हो, "शरण" यही अभिलाष ॥

अनेकानेक उत्तमोत्तम ऋषि-मुनीश्वर वैष्णव साधु-सन्त-महात्मा, महापुरुष जिस भारत की विमल ललित वसुन्धरा पर धाम-तीर्थादिकों की यात्रा करते हुए सुभग निवास करते हैं । ऐसे तीर्थरूप इस भारत को प्रतिपल अभिनमन करते हुए इसी की हृदय में अभिलाषा करते हैं कि सर्वदा इसी की पुण्य अवनि की सुरम्य रज में विलुण्ठित होते रहें ॥१७॥

(१८)

सुधी-श्रेष्ठजन-भावुकजन, गावत हरिगुण गान ।
शास्त्रज्ञान की परिचर्चा, "शरण" करत प्रभु-ध्यान॥

श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि शास्त्रों, न्याय-व्याकरण-वेदान्त-सांख्य-मीमांसा-साहित्य, ज्योतिष-आयुर्वेदादि उत्तमोत्तम शास्त्रीय-ग्रन्थों के परिज्ञाता विद्वत्प्रवरों तथा समादरणीय महानुभावों, भावुकजनों द्वारा शास्त्रज्ञान का जहाँ श्रेष्ठ सत्सङ्ग होता हो एवं जिनका श्रीहरि के मंगल गुणगण वर्णन में उन्हीं के पवित्र ध्यान-चिन्तन में समय का सदुपयोग हो ऐसे महनीय भारत का स्वरूप अनिर्वचनीय है ॥१८॥

(१९)

श्रीप्रभू-भक्ति निरत हो, अध्यात्मज्ञान का बोध ।
विप्र-सुधीजन करत नित, "शरण" कहाँ अवरोध ।।

जहाँ श्रेष्ठ विप्र विद्वान् श्रीप्रभु भक्तिपरायण होकर अध्यात्म-ज्ञान को ही अपने अन्तःकरण में धारण करते हों, उनका अपने जीवन का एकमात्र यही ध्येय, ज्ञेय उत्तम लक्ष्य हो उनको कभी कहीं पर किसी सांसारिक बाधाओं का कोई आभास ही नहीं होता है । वस्तुतः ऐसे भारतराष्ट्र का स्वरूप कितना अनुपम है जिसका विवेचन अशक्य है ।।१९ ।।

(२०)

परिव्राजक नित ब्रह्म का, करते शुभ उपदेश ।
भारतवसुधा सुभग रूप, "शरण" सुमंगल देश ।।

वेदान्तदर्शनादिशास्त्रों के मूर्द्धन्य वरेण्य परिव्राजक अर्थात् संन्यासी महात्मावृन्द सर्वदा परात्पर परब्रह्म का अभिचिन्तन करते हुए और सतत उसी ब्रह्म--तत्त्व का सर्वत्र उपदेश करते हैं ऐसे भारत वसुधा के सुन्दर स्वरूप का निर्वचन अद्भुत है, यथार्थ में यह अनुपम देश अतीव मंगलमय है ।।२० ।।

(२१)

भारत परम अजेय है, भारत प्रबल महान ।
भारत अध्यात्म धाम है, भारत "शरण" सम्मान ।।

यह हमारा पावन देश भारतवर्ष समग्रविधा से सर्वथा अजेय है, यह अतिशय प्रबल है और अध्यात्म की श्रेष्ठतम भूमि है, इसका विश्व में सर्वत्र सन्मान समादर है । इसकी उत्तम गरिमा को सभी देश

समझते हैं और इसीलिये परराष्ट्र के असंख्य लोग यहाँ आकर अध्यात्म ज्ञान की उपलब्धि पूर्वक अपार शान्ति की अनुभूति करते हैं, वस्तुतः ऐसा आदर्शपूर्ण स्वरूप इसी देश का है ॥२१॥

(२२)

भारत-ललना अनवरत, भारत हित शुभ कार्य ।
मनसा-वाचा-कर्मणा, "शरण" निरत हिय धार्य ॥

भारत की मातृ शक्ति का शौर्य विश्व विख्यात है, यहाँ की उत्तम माताओं ने मन, वाणी, कर्म से भारत देश के हितार्थ अनेक ऐसे श्रेष्ठतम कार्य किये हैं जो पूर्णतः आदर्शमय हैं । सृष्टि के आरम्भ से अद्यावधि पर्यन्त माताओं का उज्ज्वल इतिहास परम गौरवास्पद है । भक्ति क्षेत्र किंवा वीरता के क्षेत्र में या गृह-व्यवस्था आदि में इनका सर्वाग्रगण्य स्थान है ॥२२॥

(२३)

भारत की वीराङ्गना, समुपस्थित आदर्श ।
अतीतकाल अद्यावधि, "शरण" शुभानन हर्ष ॥

भारत की वीर-माताओं ने जो सर्वोत्तम आदर्श स्थापित किया वह पुरातन काल से आज दिन पर्यन्त तक यथावत् विद्यमान है । तभी उनकी मुख प्रतिभा मञ्जुल कान्तियुक्त उज्ज्वल एवं भव्यतम है । यथार्थतः ऐसा उत्तम आदर्श अन्यत्र अति दुर्लभ सर्वथा अप्राप्य है ॥२३॥

(२४)

कृतयुग-त्रेता-द्वापरान्त, कलियुग हुये अनेक ।
सृष्टिचक्र में द्वन्द्वयुद्ध, "शरण" रखैं प्रभु टेक ॥

कृतयुग (सतयुग), त्रेता, द्वापर तथा कलिकाल में ऐसे अनेक महायुद्ध हुए हैं जो अवर्णनीय हैं उनका समस्त इतिहास आज भी मनन करने से विदित होता है कि यह सम्पूर्ण सृष्टिचक्र ही ऐसा विचित्र है जहाँ सर्वदा पारस्परिक आक्रमणों का अद्भुत संगम है । इसमें तो सर्वद्रष्टा सर्वेश्वर श्रीराधामाधव प्रभु ही अपनी अहैतुकी कृपा यदि करदें तो अपने स्वरूप का अवबोध सहज है ॥२४॥

(२५)

देवासुर संग्राम का, वर्णन अति विस्तार ।
रामायण शुभकाल का, "शरण" सार अपार ॥

श्रीमद्भागवत प्रभृति पुराणों में देवासुर संग्राम का साङ्गोपाङ्ग परिवर्णन बड़े ही विस्तार पूर्वक हुआ है । इसी प्रकार त्रेता युग में भगवान् श्रीराम का तथा असुरराज रावण के महायुद्ध का विपुल वर्णन रामायण-पुराणादि शास्त्रों में विद्यमान है । ऐसा भीषण महाघोर युद्ध हुआ जो अत्यन्त विलक्षण और अभूतंपूर्व था ॥२५॥

(२६)

महाभारत विख्यात है, भीषण युद्ध विशाल ।
धर्मसुरक्षा राष्ट्रहित, योद्धा "शरण" निहाल ॥

युधिष्ठिर-भीम-अर्जुनादि पञ्च पाण्डवों एवं दुर्योधनादि शत-संख्याक--परिमित कौरवों ने अष्टादशसहस्र अक्षौहिणी सेना सहित जो भयंकर युद्ध किया वह अवर्णनीय है । सर्वनियन्ता सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण जिसके कर्णधार थे । यद्यपि करुणार्णव श्रीहरि ने दुर्योधन को बहुत समझाया परन्तु अपने अहं के पराधीन उसने कुछ स्वीकार नहीं किया, अन्ततः परम अकल्पनीय भीषणतम महायुद्ध हो ही गया ।

पितामह भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य, कुलगुरु कृपाचार्य, महायोद्धा दानवीर कर्ण जैसे असंख्येय वीरवर समराङ्गण में परास्त होकर अन्तर्धान हो गये। पाण्डव सेना के अपरिमित वीरवरेण्य उत्तर, अभिमन्यु आदि सत्य, धर्म और राष्ट्रहित समर स्थल में समर्पित होकर परम निहाल हुये। युधिष्ठिरभीमअर्जुनादि महायोद्धाओं ने विजयश्री प्राप्त कर राष्ट्र के परम गौरव वर्द्धन के साथ श्रीहरिभक्ति में ही अपने समग्र जीवन को अर्पित कर दिया ॥२६॥

(२७)

पृथ्वीराज चौहान ने, किया शत्रु-संहार ।
अप्रतिम प्रतिभा लिये, "शरण" देश चित धार ॥

वीरवरेण्य श्रीपृथ्वीराज चौहान ने राजस्थान में तीर्थगुरु श्रीपुष्कर के अङ्क में अवस्थित ऐतिहासिक सुप्रसिद्ध नगर अजमेर के पर्वतीय-महादुर्ग में निवास करते हुए अपने आराध्य के बल पर अगणित शत्रुओं का संहार कर राष्ट्र-सुरक्षा में अभूतपूर्व योगदान किया । उनकी अप्रतिम प्रतिभा थी, देश निष्ठा को अपने चित्त में धारण करके असीम साहस पूर्वक समर-भूमि पर समर्पित हो गये ॥७॥

(२८)

वीर शिवाजी वीरवर, समर कुशल अति धीर ।
श्रीहरिभक्ति अभिनिरत, "शरण" श्रेष्ठतम वीर ॥

परम वीराग्रगण्य श्रीशिवाजी का लोकपावन उज्ज्वल चरित विश्वविश्रुत है । वे अत्यन्त धीर पुरुष तथा युद्ध कौशल में महाप्रवीण व श्रेष्ठतम वीर एवं श्रीभगवद्भक्ति में अनन्य अनुरक्त थे । अपने सद्गुरु समर्थ गुरु श्रीरामदासजी महाराज के परम भक्त थे ।

उनकी आज्ञा का सतत अनुपालन करना अपना सर्वतोमुख्य कर्तव्य मानते थे ॥२८॥

(२९)

देश-संस्कृति संरक्षण, निरत शिवाजी वीर ।
असंख्य शत्रुदल संहरण, किया "शरण" कर-तीर ॥

प्रबल पराक्रमी वीरवरेण्य श्रीशिवाजी महाराज ने अपने देश और अपनी अनादिवैदिक सनातन संस्कृति की सम्यक् सुरक्षा के लिये अपने स्वकीय हाथ में शस्त्रास्त्रों को धारण कर आक्रामक अतुलित शत्रुदल का संहार किया । आपकी अपारशक्ति, अपार सामर्थ्य, अपार नीति--कौशल सभी कुछ विलक्षण थे । आपने सनातन--संस्कृति एवं उसके प्रतीक समस्त अङ्गों की विविध प्रकार से सुरक्षा की, जिसकी पावन स्मृति आज भी समग्र भारत में परिव्याप्त है ॥२९॥

(३०)

सांगा-राणा का समर, विश्वप्रसिद्ध विराट ।
अर्पित जीवन देश को, "शरण" विभव सब थाट ॥

राजस्थान में--मेवाड़ की भूमि धन्य है जहाँ महाराणा सांगा जैसे प्रबल प्रतापी वीरश्रेष्ठ ने प्रकट होकर महाभीषणतम युद्ध में शत्रुसेना को परास्त करते हुए अपरिमित शत्रुओं का विनाश किया । जिन्होंने अपना, तन, मन, धन--समस्त वैभव सब कुछ राष्ट्र के प्रति समर्पित कर श्रीभगवद्धाम की प्राप्ति की । इनका असीमतम घोर समर विश्व विख्यात है, इनकी महिमा का जितना भी वर्णन किया जाय अत्यल्प है ॥३०॥

(३१)

श्री-युत भामाशाह ने, भारत किया प्रकाश ।
समस्त वैभव तज दिया, "शरण" तजा तन श्वास ।।

दानपरायण भामाशाह के लोकपावन चरित से सभी परिचित है, उन्होंने अपने देश हित सम्पदा का विनियोग कर शत्रुओं से संघर्ष करने में अपनी सेवा समर्पित की तथा अपने समस्त भौतिक सुखों का परित्याग कर शत्रु - दल को जिस प्रकार पराजित करने में योगदान किया है । ऐसे परमोत्तम वीर महापुरुष के स्मरण मात्र से क्षीण शरीर में भी स्फूर्ति आविर्भूत होने लगती है ।।३१।।

(३२)

महाराणा प्रताप तप, अतुल अमिट अपार ।
घोर-समर तत्पर रहे, "शरण" वीर-अवतार ।।

वस्तुतः राजस्थान में मेवाड़ क्षेत्र की धरा बड़ी ही सौभाग्यपूर्ण है, चित्तौड़ और उदयपुर ने जो इतिहास प्रस्तुत किया है वह इस भूतल पर अक्षुण्ण रूप से स्थित रहते हुए भारत के वर्तमान एवं भावी वीरों के लिये अद्भुत प्रेरणा स्रोत रहेगा ।

प्रबल प्रतापी महाराणा श्रीप्रताप ने भारत की आन, बान और शान की रक्षा में जो तपस्या की है उसका हृदय को उद्वेलित करने वाला जाज्वल्यमान इतिवृत्त आज भी प्रत्यक्ष अनुभूति कराता है । उनकी हृदयस्पर्शी रोमाञ्चकारी प्रत्येक घटनायें इतनी अमिट, अपार अपूर्व है स्मरण मात्र से ही विवेक प्रस्फुटित हो जाता है । उन्होंने भारत के सुभग स्वरूप के संरक्षण हेतु जिस प्रकार अति भीषणतम समर किया,

शत्रुओं का शमन-संहार किया किस रूप में उसे व्यक्त करें, लेखनी असमर्थ है । वे महावीरवरेण्य वीर - अवतार थे । उनका चिन्तन-स्मरण ही भारत निवासियों को अविचल उद्‌बोधन देता रहेगा ॥३२॥

(३३)

मरु-राठौड़ दुर्गादास, नीतिनिपुण बलवान ।
हिन्दू=संस्कृति रक्षा हित, "शरण" शरण-भगवान॥

मरु-दिवाकर राठौड़-शिरोमणि वीर श्रीदुर्गादास महाभाग ने अपनी जिस निपुणतम नीति से हिन्दु-संस्कृति रक्षार्थ जो कुशल कार्य किया वह जगद्विख्यात है । उनका अद्‌भुत बल - सामर्थ्य भावी सूझ-बूझ आदि सभी कुछ विलक्षण थे । वे अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक देशहित संघर्षरत रहे उसके उल्लेख के लिए कोई शब्द--राशि ही नहीं है । ऐसे अप्रतिम--मेधा--सम्पन्न वीर ने सर्वदा के लिए श्रीभग-वत्सान्निध्य प्राप्त किया ॥३३॥

(३४)

जयमल-दूदाजी हुये, भक्त - वीर अतिश्रेष्ठ ।
मरु-वसुधा उज्वल करी, "शरण" इष्ट है प्रेष्ठ ॥

राजस्थान की अति पावन मारवाड़-वसुधा पर स्थित भगवान् श्रीचारभुजानाथजी की परम पुनीत ऐतिहासिक नगरी मेड़ता जहाँ भक्तिमती श्रीमीरांबाई ने अपने परमाराध्य श्रीगिरिधरगोपालजी की उपासना से भक्तिरस--भागीरथी को प्रवाहित किया । अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) के जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज से ही श्रीमीरांबाई ने बाल अवस्था में श्रीगोपालमन्त्रराज की वैष्णवी दीक्षा

प्राप्त कर परम मनोहर प्रतिमा दिव्य-आराधना में प्रवृत्त हुई उनके वे ही इष्टदेव श्रीगिरिधरगोपालजी जो वर्तमान में श्रीपरशुरामद्वारा मन्दिर श्रीपुष्करराज में विद्यमान हैं । मेड़ता की अपूर्व महिमा है, यहीं के भक्त शिरोमणि वीर श्रेष्ठ श्रीजयमलजी और श्रीदूदाजी जिनका उत्तम-चरित अति प्रख्यात है एक बार विधर्मी शत्रुओं की प्रबल सेना ले जब आक्रमण किया तो उस समय श्रीजयमलजी अपनी श्रीहरि--आराधना में स्थित थे । ऐसे संकट के क्षण में भगवान् श्रीचरभुजानाथजी ने श्रीजयमलजी के रूप में स्वयं ने भीषण युद्ध कर शत्रु-सेना को विफल किया । श्रीजयमलजी की श्रीप्रभु--भक्ति अद्भुत थी । इन्होंने चित्तौड़ के युद्ध में भी भाग लिया था । अपने इष्ट बल पर इन्होंने मारवाड़ के स्वरूप को समुज्ज्वल किया, ऐसे वीर भक्तों से हमारा देश परम गौरवान्वित है ॥३४॥

(३५)

श्रीगुरुगोविन्दसिंह का, प्रभाव भव-विख्यात ।
हिन्दु-संस्कृति सम्पोषक, "शरण" सकल विज्ञात॥

हिन्दू संस्कृति सम्पोषक श्रीगुरुगोविन्दसिंह के अभूतपूर्व शौर्य अदम्य साहस और अद्भुत प्रभाव से कौन परिचित नहीं, सम्पूर्ण विश्व उनकी विलक्षण वीरता तथा असीम प्रभाव से भलि भाँति परिचित है । उन्होंने भारत की सर्वविध रक्षा हेतु सर्वस्व न्यौछावर किया । उनके दृढ संकल्प, व्रत, नियम इतने प्रेरणादायी थे, जिससे देश भक्तों को उत्तम मार्ग दर्शन मिलता है । वे श्रीहरि के अनन्य भक्तराज भी थे, उनका सम्पूर्ण जीवन क्रम देश-रक्षा और श्रीहरिभक्ति में ही आदर्शपूर्ण रहा है। ऐसे परम शौर्य सम्पन्न महापुरुष के मंगलमय स्वरूप को अपने हृदय में

धारण कर भारत के आबाल-वृद्ध-वनिता सभी सर्वाङ्गीण रूप से परम गौरव का अनुभव करते हैं ॥३५॥

(३६)

लक्ष्मीबाई रानी ने, झाँसी का इतिहास ।
उज्वल कितना कर दिया, "शरण" हृदय में वास ॥

अतीव उत्कृष्ट कोटि की महावीराङ्गना झाँसी-रानी श्रीलक्ष्मी-बाई ने झाँसी के गौरवपूर्ण इतिहास को इतना उज्ज्वलतम बना दिया जिसको स्मरण करके भारत की सम्पूर्ण जनता उनको अपने अन्तःकरण में विराजित कर स्वयं को परम सौभाग्य का अनुभव करती है । अपनी सेना के अतिरिक्त स्वयं अश्वारोहण करके अंग्रेजों से जो महाघोर भीषणतम संग्राम किया और अन्त में अपने आपको जिस प्रकार बलिदान किया ऐसा उदाहरण मिलना दुर्लभ है । उनके इस प्रसंग को स्मरण करते ही वाणी स्तब्ध और लेखनी अवरुद्ध हो जाती है, जय हो ऐसी महावीरा-ङ्गना झाँसी-रानी श्रीलक्ष्मीबाई की ॥३६॥

(३७)

निम्बार्काचार्यपीठ पर, शोभित पीठाचार्य ।
निम्बार्कशरणदेव की, "शरण" आज्ञा धार्य ॥

वैष्णव चतुःसम्प्रदाय में निम्बार्क सम्प्रदाय अतीव प्राचीनतम है । सम्प्रदाय के आद्याचार्य जगद्गुरु प्रवर श्रीहरिकरकमलविराजित चक्रराज श्रीसुदर्शनावतार श्रीनिम्बार्काचार्य भगवान् हैं, महाराज परीक्षित् के साम्राज्यकाल में आप आविर्भूत हुए । आपकी ही आचार्यपीठ--परम्परा की ४३ वीं पुस्त (पीढी) में श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी महा-राज हुए । आपश्री ने वि० सं० १८७० में पीठ को सुशोभित किया ।

आपश्री ने तत्कालिक भरतपुर नरेश और अंग्रेजों के द्वन्द्व युद्ध में भरतपुर किला के मन्दिर में विराजित श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के परम वरेण्य रसिक शिरोमणि श्रीचतुरचिन्तामणिदेवाचार्य (श्रीचतुरानागाजी महाराज) के परमाराध्य भगवान् श्रीविहारीजी महाराज के सेवार्थ मन्दिर की सर्वविध सुरक्षार्थ ३०० सशस्त्र साधु-सन्तों को भरतपुर युद्ध में भेजने की आज्ञा प्रदान की । समस्त सन्तों ने आचार्यश्री की पावन आज्ञा को शिरोधार्य कर भरतपुर की ओर प्रस्थान किया ॥३७॥

(३८)

शतत्रय साधु-सन्तों ने, किला-भरतपुर जाय ।
अंग्रेज-नरेश युद्ध में, "शरण" करी सहाय ॥

आचार्यवर्य श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी महाराज की परम मंगलमयी आज्ञा को प्राप्त कर निम्बार्क सम्प्रदाय के ३०० सशस्त्र वीर सन्तों ने अतिघोर युद्ध में भरतपुर नरेश की सहायता की, जिस युद्ध में उन वीर - सन्तों ने अंग्रेजों को विचलित कर दिया । भरतपुर किला को तथा वहाँ विद्यमान भगवान् श्रीविहारीजी के मन्दिर को सुरक्षित रखते हुए बड़ी ही सावधानी से सन्तों ने युद्ध में अपने अद्भुत पराक्रम से सभी को चकित कर दिया ॥३८॥

(३९)

किला-भरतपुर मन्दिर में, विहारीजी भगवान ।
तत्सुरक्षार्थ सन्तों ने, "शरण" समर्पण जान ॥

भरतपुर किला में भगवान् श्रीविहारीजी के मन्दिर की सर्वविध सुरक्षार्थ सैकड़ों वीरवरेण्य सन्त--महात्माओं ने जिस अद्भुत प्रतिभापूर्ण

वीरता से युद्ध किया आज भी हृदय को पुलकित करता है । इस भीषण युद्ध में प्रायः अधिकांश सन्त श्रीप्रभु के पावनधाम को समर्पित हो गये। इतिहास से विदित होता है कि इस युद्ध में भरतपुर नरेश सफल न हो सके । अंग्रेजों ने श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ द्वारा नरेश को सहयोग किये जाने पर आचार्यपीठ के अजमेर-क्षेत्रीय लगभग पाँच ग्राम (गांव) विपुल भूमि तथा वहाँ का समस्त वैभव आदि सभी अपने अधीन कर लिया । तत्कालिक जोधपुर नरेश ने मारवाड़-क्षेत्रीय समस्त जागीदार, सामन्त-ठाकुर महानुभावों को यहाँ आचार्यपीठ निमन्त्रित कर विराट् सभा में आचार्यपीठ की सेवार्थ २) रुपये प्रति एक घोड़ा की जागीर के अनुसार वार्षिक भेंट निर्धारित करदी जो अद्यावधि यथावत् चल रही थी किन्तु भारत-स्वतन्त्रता के १० वर्ष पश्चात् इस प्राचीन-परम्परा में विक्षेप उत्पन्न हो गया जिसकी चर्चा अभी भी ठिकानाओं के वयोवृद्ध श्रीठाकुर महानुभाव जब भी मिलते हैं उक्त भेंट प्रसङ्ग के अवरोध की चर्चा कर ही देते हैं ॥३९॥

(४०)

वैष्णव चार सम्प्रदाय, अनी-अखाड़ा ठान ।
शत्रु-शमन हित शस्त्रहस्त, 'शरण' सतत अवधान॥

निम्बार्क--विष्णु--माध्व--रामानन्द इन चार सम्प्रदाय के आचार्य--सन्त--महान्त महानुभावों ने समवेत रूप से मिलकर इसी राजस्थान की धरा पर परम शोभायमान जयपुर महानगर में अनी-अखाड़ों की संस्थापना की जिससे साधु--सेना द्वारा आवश्यकता पड़ने पर धर्म-संस्कृति की भलि प्रकार से सुरक्षा की जा सके । इन अनी--अखाड़ों की स्थापना की सर्वाधिक प्रमुख भूमिका श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के स्वामी

श्रीबालानन्दाचार्यजी महाराज एवं निम्बार्क सम्प्रदाय के अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी महाराज की रही है। अनी का अर्थ है --सेना, अखाड़ा का तात्पर्य है-सेनास्थल । उस यवन शासनकाल में विधर्मियों द्वारा अत्याचार एवं युद्धकाल में सन्तों ने भी समय-समय पर शस्त्रों से सुसज्जित हो बड़ी सावधानी पूर्वक समराङ्गण में अपने प्रबल शौर्य के साथ कितने ही युद्ध में समर्पित भी हो गये ॥४०॥

(४१)

षड्दर्शन बहु सन्तों ने, किया शत्रु-परिहार ।
जनता ने भी विविध विधा, "शरण" किया सहकार॥

वैष्णव--संन्यासी--उदासी--निरञ्जनी--दादूपन्थी आदि षड्--दर्शन के वीर--सैनिकों सन्तों ने भी यवनकाल में उनके प्रबलतम उत्पीड़न आक्रमण में युद्ध-भूमि में उन्हें परास्त कर अपने राष्ट्र--संस्कृति और वैदिक सनातन धर्म की सुरक्षा करते हुए स्वयं को समर्पित भी किया। इसी प्रकार भारतीय धर्मप्राण जनता ने भी ऐसे वीर--सन्तों का मनसा, वाचा, कर्मणा एवं तन, मन, धन से सहयोग किया जो निश्चय ही आदर्शरूप है । षड्--दर्शन सन्तों का यह अभूतपूर्व समर्पण भी सर्वदा के लिये चिरस्मरणीय रहेगा ॥४१॥

(४२)

लोकमान्य श्रीतिलक ने, किया शंख का नाद ।
देश-स्वतन्त्रता हितप्रद, "शरण" किया तन-दान॥

लोकमान्य श्रीबालगङ्गाधर तिलक ने भारतदेश को स्वतन्त्र करने के लिए सर्वप्रथम शंख नाद अर्थात् अपने पावन सन्देश से

सुसुप्त भारत जनमानस को अपने कर्तव्य बोध के लिये सतर्क एवं सावधान किया । लोकमान्य श्रीतिलक द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता पर विस्तृत व्याख्या सम्पादित हुई जो राष्ट्र की साहित्य सेवा में अद्भुत योगदान चिरस्मरणीय है । देश स्वतन्त्रता के लिये उन्होंने सर्वात्मना अपना दिव्य--जीवन समर्पित किया ऐसे उत्तमश्लोक महापुरुष का स्मरण ही सकलजन प्रेरणादायी है ॥४२॥

(४३)

श्रीगोखले--गाँधीजी, सुभाषचन्द्र महान ।
भगतसिंह श्रीसावरकर, "शरण" किया तन दान ॥

हमारा यह दिव्यतम भारतवर्ष देश के परस्पर गृह संघर्ष के कारण मुस्लिम शासकीय सत्ता में आगया, पश्चात् उनकी आपसी फूट पर अंग्रेजी सत्ता भारत में व्याप्त हो गई । जिसका दुष्परिणाम हमारी संस्कृति, धर्म, देव मन्दिर, गोमाता आदि सभी पर संकट की महा-घटा आच्छादित हो गई, उसी की मुक्ति के लिये स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं सत्याग्रह में श्रीगोपालकृष्ण गोखले, महात्मा श्रीगाँधीजी जो मोहनदास कर्मचन्द गांधी नाम से जाने जाते थे, उनका सम्पूर्ण जीवन देश स्वतन्त्रता हेतु ही समर्पित था और देश को स्वतन्त्र करके ही वे बलिदान हो गये ऐसे महापुरुष का उदात्त जीवन **यावच्चन्द्रदिवाकरौ** की स्थिति काल तक चिरकाल पर्यन्त स्मरणीय रहेगा । बंगदेश को अलंकृत करने वाले वीरवरेण्य स्वराष्ट्र--नेता श्रीसुभाषचन्द्र बोस का अदम्य शौर्य-साहस अपूर्व था । अंग्रेजों से संघर्ष करने के लिये उन्होंने जापान जाने पर आजाद हिन्द-फौज का शुभारम्भ कर विपुल संघर्ष करते हुए देश के प्रति न्यौछावर हो गये । इसी प्रकार श्रीभगतसिंह का जीवन लोक प्रसिद्ध हैं उन्होंने देश

हित अकल्पनीय कठोरतम यातनाओं को सहन करते हुए अन्त में बलिदान हो गये । वीरवरेण्य श्रीवीर सावरकर ने सैकड़ों मीलों की अगाध समुद्र की उत्ताल तरङ्गों में प्रताड़ित होते हुए तैर कर समुद्र-यात्रा पूर्ण की, यथार्थ में इन पुण्यश्लोक महापुरुषों का उत्तम--जीवन भारतदेश को पूर्ण स्वतन्त्र करने में ही यापन हुआ । देशहित इनके साथ हुई जघन्य यातनाओं का स्मरण करते हुए शरीर रोमाञ्चित हो उठता है । वस्तुतः ये पुण्यात्मा महापुरुष सर्वदा अभिवन्दनीय हैं ॥४३॥

(४४)

महामना श्रीमालवीय, मदनमोहनलाल ।
हिन्दूविश्वविद्यालय, "शरण" हिन्दु-प्रतिपाल ॥

महामना पं० श्रीमदनमोहनजी मालवीय का लोकपावन जीवन इतना उदात्त उत्कृष्टतम था जिन्होंने हिन्दुत्व की रक्षार्थ वाराणसी (काशी) में विराट् रूप से हिन्दु--विश्वविद्यालय का संस्थापन किया और तदर्थ भारत के विभिन्न अञ्चलों में कठिन परिभ्रमण कर अर्थ का सञ्चय किया जिसके फलस्वरूप उक्त विश्वविद्यालय का निर्माण सम्भव हो सका । देश को स्वतन्त्र कराने में श्रीमालवीयजी का अनुपम परिश्रम था । आज भी सम्पूर्ण हिन्दु समाज श्रीमालवीयजी के इस महामहनीय कार्य से उपकृत नहीं हो सकता । यथार्थतः ऐसा जाज्वल्यमान जीवन सर्वदा वरेण्य है । वे हिन्दुत्व के परिपालक महापुरुष थे, आज भी समस्त भारतवासी उनकी पावन--स्मृति में अपने को कृतकृत्य समझते हैं ॥४४॥

(४५)

श्रीयुत अरविन्दघोष की, सुन्दर मधुर सुवास ।
हिन्दुत्व रक्षण तपोनिरत, "शरण" प्रभू विश्वास ।।

स्वतन्त्रता--संग्राम के क्रान्तिकारी विशिष्ट महापुरुषों में श्री अरविन्द घोष का विश्वविश्रुत नाम अन्यतम है । अरविन्द अर्थात् कमल-पुष्प की भाँति इनकी दिव्य सुन्दर मधुर सुगन्धित अर्थात् उनके देशहित किये जाने वाले सम्पूर्ण क्रिया--कलाप अतीव शीर्षस्थ थे । उन्होंने भारत स्वतन्त्र होने पर अपना शेष जीवन अध्यात्म--विद्या के गहन चिन्तन एवं श्रीप्रभु स्मरण में व्यतीत कर सर्वदा के लिये श्रीभग-वत्सान्निध्य प्राप्त किया । ऐसे अमलात्मा महापुरुष का स्मरण ही हमारे जीवन का अक्षुण्णरूप से प्रेरणा स्रोत रहेगा ।।४५ ।।

(४६)

खरवा--श्रीगोपालसिंह, मोडसिंह वलवान ।
श्रीनिम्बार्कपीठ-शिष्य, "शरण" शरण भगवान ।।

खरवा--ठिकाना अजमेर (राज०) के ठाकुर श्रीगोपाल-सिंहजी एवं उनके भतीजा श्रीमोडसिंहजी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के सन्दर्भ में ब्रिटिश शासन सत्ता से युद्ध के लिये गोपनीय रूप से शस्त्राशस्त्र निर्माण के लिये एक संस्थान का शुभारम्भ किया उसमें बमों के निर्माण का कार्य भी आरम्भ कर दिया । किन्तु दैवयोगवशात् अंग्रेजों को इस रहस्य का परिज्ञान हो गया जिसके फलस्वरूप श्रीगोपालसिंहजी एवं श्रीमोडसिंहजी गुप्तवास में निकल पड़े । ब्रिटिश सरकार ने उनका पता लगाने वाले को पर्याप्त पुरस्कार भी निर्धारित कर दिया था । वे उभय महानुभाव वनोपवनों में अनेक कष्ट उठाते हुए रोहिण्डी ठिकाना में

तत्कालिक ठा० श्रीहमीरसिंहजी के यहाँ आकर गुप्तवास में रहे । एक दिन वे किशनगढ की ओर ऊटों की सवारी से जा रहे थे । मार्ग में अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) आ गया । अपने गुरुस्थान--श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ दर्शनार्थ मन्दिर आये श्रीभगवद्दर्शन एवं अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त कर अपार हर्षित हुए । इनका आचार्यपीठ आने का सन्देश अंग्रेजों को अजमेर पता चल गया । अजमेर से अश्वारोही एवं पैदल सशस्त्र सेना ने आचार्यपीठ को आघेरा । वे उभय ठाकुर महाभाग भी युद्ध के लिये तत्पर हो गये । किन्तु आचार्यपीठ के अधिकारी वर्ग एवं आचार्यश्री के अद्भुत मार्गदर्शन से उनका ब्रिटिश--सरकार से समझौता हो गया और वे आचार्यपीठ से पीठस्थ बग्गी--वाहन से खरवा पहुँचे । खरवा प्रस्थान के समय अपने ऊँट और सम्पूर्ण शस्त्र उन्होंने आचार्यपीठ को समर्पित कर दिये; जिसके प्रतीक आज भी पीठ में कतिपय शस्त्रादि सुरक्षित हैं । ऐसे उत्तम राष्ट्रवीर के स्मरण से हम सभी परम गौरवान्वित हैं ॥४६॥

(४७)

वल्लभभाई पटेल ने, नेहरु (पण्डित) जवाहरलाल।
राष्ट्रपति राजेन्द्र ने, “शरण” देश प्रतिपाल ॥

स्वतन्त्रता--संग्राम के शीर्षस्थ नेता श्रीवल्लभ भाई पटेल का पवित्र नाम भारत के इतिहास में सर्वदा विद्यमान रहेगा । देश को स्वतन्त्र कराने में इनका अभेद्यकवच समादरणीय है । भारत के स्वतन्त्र होते ही इनका प्रथम चरण श्रीसोमनाथ मन्दिर का पुनर्निर्माण हिन्दु सनातन संस्कृति का प्रमुख द्योतक था । पं० श्रीजवाहरलाल नेहरु जेल की

यातनायें सहकर देश को स्वतन्त्र कराने में अग्रगण्य रहे और उन्होंने देश के प्रथम प्रधानमन्त्री पद पर समासीन रहकर देश का प्रशासन किया। इसी प्रकार डा० श्रीराजेन्द्रप्रसादजी का अत्यन्त उज्ज्वल जीवन परम गौरवमय था। इन्होंने अमित कष्ट उठाकर देश को स्वतन्त्र करने में अपरिमेय योगदान किया जिसके फलस्वरूप ये भारत के प्रथम राष्ट्रपति पद पर अधिष्ठित होकर देश को पावन दिशा प्रदान की। वि० सं० २०१० के प्रयाग महाकुम्भ के मंगलमय अवसर पर विशाल सन्त सम्मेलन में इस प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक से इन महाभाग से सम्पर्क हुआ जो अद्यावधि यथावत् स्मरण है ॥४७॥

(४८)

श्रीगुरु-गोलवलकरजी, हिन्दू - हित कटिबद्ध ।
यावज्जीवन देशरत, "शरण" सतत सन्नद्ध ॥

श्रीसदाशिवराय--माधवराय गोलवलकर श्रीगुरुजी ने अपना पूर्णतम समस्त जीवन अपने भारत--राष्ट्र की उच्चतम सेवा में व्यतीत किया और संघ की शाखायें पूरे देश में संस्थापित कर विधर्मी शत्रुओं का पूर्णरूपेण दमन किया। उन्होंने हिन्दुत्व के संरक्षण हेतु विविध विधाओं से असीम कष्ट को सह कर भी भारत के उच्चतम गौरव को प्रतिष्ठित रखा और तदर्थ अपेक्षित सत्प्रयत्नों का समाश्रय लिया। राष्ट्र सेवा में वीरों की भाँति सदा कटिबद्ध रहते थे। उनके पवित्र जीवन के अनेक उत्तमोत्तम उदाहरण है जो देश हित के लिये परम मंगलकारक हैं। ऐसे पुण्यश्लोक पुण्यात्मा की पावन--प्रेरणा ही राष्ट्र के लिए सदा सर्वदा अवधारणीय है, प्रस्तुत इस ग्रन्थ प्रणेता के प्रति श्रीगोलवलकरजी का अति निकटतम सम्पर्क था ॥४८॥

(४६)

किया स्वदेश भक्तों ने, भारत का हित-मान ।
अविरल उनकी साधना, "शरण" आज भी गान ।।

इस प्रकार अपने स्वदेश भारतवर्ष की अनुपम सेवा में सदा समर्पित निष्ठावान् श्रेष्ठ--भक्तों ने अपने देश हितार्थ उत्तम साधनाओं में सतत प्रवृत्त रहते हुए जो भारत का सम्मान, प्रतिष्ठा को यथावत् रखा है जिसकी आज भी अनुभूति हुआ करती है । ऐसे देशनिष्ठ पुण्यात्मा वीर--भक्तों का सर्वदा अनुस्मरण आदर्शरूप है ।।४६ ।।

(५०)

स्वामी विवेकानन्द ने, किया विदेश प्रचार ।
श्रुति-अध्यात्म विद्या का, "शरण" बताया सार ।।

विश्वविख्यात स्वामी श्रीरामकृष्ण परमहंस के परम कृपापात्र शिष्य स्वामी श्रीविवेकानन्दजी ने परराष्ट्रों में जाकर भारतीय वेदादि शास्त्र प्रतिपादित अध्यात्म विद्या का प्रचुर प्रचार--प्रसार कर यहाँ की दिव्य धवल कीर्ति को प्रतिष्ठापित किया जो आज भी भारत के समग्र जनमानस को सत्प्रेरणा प्रदायक सर्वोच्चतम कार्य है ।।५० ।।

(५१)

स्वामी रामतीर्थ का, शुभ - सन्देश अवधार ।
पाश्चात्य-जन विस्मित हुये, "शरण" सुना साभार।।

स्वामी श्रीरामतीर्थ के वेदादि शास्त्र सम्मत एवं राष्ट्र भक्ति-परक विभिन्न प्रेरणादायी श्रेष्ठतम सन्देशों को अपने हृदय में धारण कर

पाश्चात्य विदेशीजन भी परम विस्मित हो गये और उन्होंने साभार स्वीकार किया कि भारतीय वैदिक सनातन संस्कृति ही विश्व में सद्-भावना एवं शान्ति स्थापित करने में पूर्णतया सक्षम एवं समर्थ है । वस्तुतः श्रीस्वामीजी महाराज का उदात्त स्वरूप सर्वदा सन्मार्गदर्शक रहा है ॥५१॥

(५२)

पण्डित कालूरामजी, - दयानन्द - उपदेश ।
सनातन धर्म का दिया, "शरण" राष्ट्र-सन्देश ॥

विद्वन्मूर्द्धन्य पं० श्रीकालूरामजी शास्त्री एवं पण्डितराज श्रीदयानन्दजी शास्त्री ने अपने प्रेरणादायी प्रवचनों से जो नव चेतना जागृत की वह नितान्तरूपेण परम गौरवास्पद है । पण्डितराज श्रीदयानन्दजी शास्त्री ने 'धर्म विज्ञान' नामक विशालतम ग्रन्थ का आलेखन प्रणयन कर अनादि वैदिक सनातन धर्म की जो अनुपम सेवा की वह निश्चय ही अवर्णनीय है ॥५२॥

(५३)

अखिलानन्द प्रेक्षावान, प्रसिद्ध पण्डितराज ।
किया प्रचार हिन्दुत्व का, "शरण" सनातन काज ॥

सनातन धर्म जगत् के परम विख्यात महामनीषी पण्डित राज श्रीअखिलानन्दजी ने अनादि वैदिक सनातन धर्म एवं हिन्दु समाज की उज्ज्वल गरिमा को सर्वत्र प्रसारित करने के लिये धर्म--ग्रन्थों एवं प्रेरणाप्रद प्रवचनों से भारत की अनुपम सेवा सर्वदा स्मरणीय रहेगी ॥५३॥

(५४)

पण्डित गिरधरशर्माजी, स्वराष्ट्र स्तम्भ महान ।
प्रचार वैदिक धर्म का, "शरण" किया तज मान ॥

जयपुर (राजस्थान) के सुप्रसिद्ध पं० श्रीगिरिधर शर्मा चतुर्वेदी जो अपने भारत--सनातन धर्म के महान् दृढ--स्तम्भ थे । इन्होंने अनादिवैदिक सनातन धर्म का उपदेशों, प्रवचनों, ग्रन्थों आदि विविध विधाओं से देश की अनुपम सेवा की है जो सतत समादरणीय रहेगी ॥५४॥

(५५)

श्रुति-शास्त्रार्थ महारथी, माधवाचार्य अजेय ।
विविध शास्त्र के रचयिता, "शरण" विश्व विज्ञेय ॥

भारत की राजधानी दिल्ली में सतत निवास करने वाले शास्त्रार्थ महारथी विद्वद्वरेण्य पं० श्रीमाधवाचार्य वैष्णव मूर्द्धन्य परम वरेण्य महा-मनीषीप्रवर थे । इन्होंने हिन्दी में **क्यों** नामक अनुपम ग्रन्थ का प्रणयन कर देश और सनातन धर्म जगत् की अभूतपूर्व सेवा की है । उक्त ग्रन्थ में अनेकानेक शङ्काओं का सप्रमाण समाधान किया है । चारों वेदों पर विस्तृत व्याख्यायें करके जो राष्ट्र की सर्वाधिक मूल सम्पदा--वेदशास्त्र, उसकी सेवा की है । अपने शास्त्रार्थों, प्रवचनों से राष्ट्र भक्तों एवं राष्ट्र वीरों को जो अद्भुत प्रेरणा दी वह अतीव महनीय है । वे अपने शास्त्रार्थ में सदा विजयी रहे हैं विपक्षी उनके नाम श्रवण से ही पलायमान हो जाते थे, ऐसे वीर महारथी का अनुस्मरण सन्मार्गदर्शक है ॥५५॥

(५६)

धर्मसम्राट्--सुप्रसिद्ध, करपात्री परिव्राट् ।
देश-धर्म-श्रुति-धेनुरत, "शरण" कार्य विराट् ॥

धर्मसम्राट् स्वामी श्रीहरिहरानन्दजी सरस्वती (स्वामी श्री करपात्रीजी) महाराज का लोकपावन जीवन का स्वरूप कितना अनुपम,

अद्भुत एवं अप्रतिम था जिसका वर्णन ही अशक्य है । उन्होंने भारत राष्ट्र के लिये अनादिवैदिक सनातन धर्म जगत् के लिये वेदादि शास्त्रों के लिये गोवध निरोध के लिये जो विशालतम कार्य किये वे कितने महिमामय एवं गौरवास्पद थे । अपने नानाविध ग्रन्थ लेखन से अत्यन्त प्रेरणाप्रद प्रवचनों से, श्रीमद्भागवत के कथा प्रसङ्गों से जो भक्तिरस की अध्यात्म ज्ञान की, भारत के उज्ज्वल भविष्य की प्रेरणादायी वाणीसुधा सरस्वती की अजस्र धारा बहाई जिसमें अगणित भावुकों ने आप्लावित होकर दिव्य आनन्दानुभूति पूर्वक अनिर्वचनीय प्रेरणा प्राप्त की । उन्होंने अखिल भारतीय धर्मसंघ की संस्थापना कर अनेक समायोजन किये । रामराज्य परिषद् के शुभारम्भ से राजस्थान के क्षेत्रीय--वीरों को प्रेरित किया । परिषद् की पूरे भारत में शाखा--प्रशाखाओं का निर्माण कर राष्ट्र को उत्तम दिशा प्रदान की । सुरभारती संस्कृत के अक्षुण्ण सेवार्थ अनेक धर्मसंघ द्वारा सञ्चालित संस्कृत महाविद्यालयों का संस्थापन किया अनेक महायज्ञानुष्ठानों, धर्मसंघ सम्मेलनों द्वारा वैदिक सनातन पद्धति का प्रबल प्रचार किया । उन परमपुण्यश्लोक धर्मसम्राट् का अभिचिन्तन, उनका पावन स्मरण सभी भारतवासियों के लिये स्वकीय कर्तव्य उद्बोधन का मार्ग प्रशस्त करता है ॥५६॥

(५७)

पुरीशङ्कराचार्यजी, -- श्रीनिरञ्जनदेव ।
वेद-धर्म अथ गोरक्षण, "शरण" विविध सत्सेव ॥

पूर्वाम्नाय जगन्नाथ पुरीपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज के अतिश्रेष्ठ सर्वाग्रगण्य सुपावन मङ्गलमय नाम से सम्पूर्ण भारत सम्यक् प्रकार से परिचित है । आचार्यश्री अपने वार्द्धक्य--काल में भी अनादिवैदिक सनातन धर्म के लिये एवं गोहत्या

निरोध के लिये जो प्रबलतम सत्याग्रह--आन्दोलन चलाया, जो भारत के इतिहास में सर्वोपरि था । इसी प्रसङ्ग में आपने ७२ दिवस पर्यन्त कठोर अनशन व्रत धारण किया । यावज्जीवन सिंहासन, छत्र--चँवर आदि का प्रयोग नहीं किया । धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज को उनके द्वारा किये जाने वाले विशिष्ट आयोजनों, अधिवेशनों, सम्मेलनों में आपका सर्वाधिक योगदान रहता था । आपके द्वारा अनेक महायज्ञ, विराट् धर्मसंघ--सम्मेलन सम्पादित हुए हैं जो बड़े ही महत्वपूर्ण थे । श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ से आपका तथा धर्म सम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज का घनिष्ठतम सम्बन्ध था । सम्प्रति आपके अभाव का समस्त धार्मिक जगत् अनुभव कर रहा है । भारत देश और यहाँ की वैदिक संस्कृति के लिये आपने अपरिमेय कष्ट उठाया तथा उसे सुरक्षित रखने के लिये मनसा, वाचा, कर्मणा अपना सब कुछ अर्पण किया । ऐसे उत्तमश्लोक आचार्यवर्य की स्मृति होते ही धर्मनिष्ठ जगत् कोअपने कर्तव्य की अनुभूति होना स्वाभाविक है ॥५७॥

(५८)

श्रीदेवनायकाचार्य, प्रसिद्ध भारत देश ।
भारत वसुधा पर दिया, "शरण" धर्म सन्देश ॥

रामानुजाचार्य श्रीदेवनायकाचार्यजी जो सनातन धर्म जगत् के दृढतम स्तम्भ थे । जिन्होंने सनातन धर्म, वैष्णव धर्म का प्रबल प्रचार किया । सनातन धर्म विपरीत तत्त्वों के प्रश्नों का शास्त्रीय प्रमाणों के उद्धरण पूर्वक सम्यक् समाधान करने में प्रखर मेधावी मूर्द्धन्य महानुभाव थे । आपके आकस्मिक निधन से सनातन वैष्णव धर्म जगत् की क्षति अपूरणीय है ॥५८॥

(५९)

महात्मा श्रीप्रभुदत्तजी, ब्रह्मचारी अति-सिद्ध ।
गो-रक्षा हित व्रत किया, "शरण" सुलेख प्रसिद्ध ।।

परम भागवत विश्वविख्यात श्रीप्रभुदत्तब्रह्मचारीजी महाराज का सम्पूर्ण जीवन शास्त्र चिन्तन, ग्रन्थ लेखन, गोसेवा में व्यतीत हुआ। आपने बहुविध ग्रन्थों की भगवान् श्रीवेदव्यास की भाँति रचना की है । आपश्री ने गोवध--निरोध हेतु प्रबल सत्याग्रह--आन्दोलन में सर्वात्मना उसे सफल बनाने हेतु अत्यधिक श्रम किया । समय-समय पर स्वदेश वीरों को उद्‌बोधन दिया । गो--सत्याग्रह में अपने दीर्घकालिक अनशन में रहकर अकल्पनीय तपस्या की । उन परम पुण्यश्लोक श्रीब्रह्मचारीजी के आदर्शपूर्ण जीवन से भावुक--जनता को उत्तम शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए ।।५९।।

(६०)

स्वामी गङ्गेश्वरानन्द, जिन कृत वेद-प्रचार ।
राष्ट्रभक्ति प्रिय उपदेशक, "शरण" शास्त्र संचार ।।

उदासी--सम्प्रदाय के लोक विख्यात महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीगङ्गेश्वरानन्दजी महाराज ने चारों वेदों का दिव्य प्रकाशन कराके भारत के समग्र--प्रान्तों में शतवर्षीय आयु में भी स्वयं परिभ्रमण कर वेद--मन्दिरों का प्रतिष्ठापन करके सर्वत्र वेदों का विपुल प्रचार किया । जिनके गम्भीर--प्रवचनों से धार्मिक क्षेत्र में एवं राजनीति क्षेत्र में भी अत्यद्‌भुत मार्गदर्शन मिलता था । वेदों पर उनके द्वारा प्रणीत विस्तृत व्याख्यायें द्रष्टव्य है । यथावसर भारत के उत्तम वीरों को उनके द्वारा उत्तम उद्‌बोधन मिलता रहा है । राष्ट्र--भक्ति से ओत--प्रोत उनके दिव्य हृदयस्पर्शी

मधुर ओजपूर्ण प्रवचनों से सामान्यजनों में भी वीरता का सञ्चार होने लगता और जब भक्तिरस की सुझावपूर्ण धारा उनके वचनामृत से निर्झरित होती तो भावुक रसिक हृदय उल्लसित हो उठता । उन आदर्श महापुरुष का उत्तम--उपेदश सर्वदा ग्राह्य है ॥६०॥

(६१)

रामजन्मभूमि प्रवृत्त, गोवध-निरोध-दक्ष ।
वामदेव परिव्राट् सिद्ध, "शरण" दक्ष परपक्ष ॥

स्वामी श्रीवामदेवजी महाराज श्रीरामजन्मभूमि (अयोध्या) के मुक्ति--आन्दोलन संघर्ष में सर्वाग्रगण्य थे । गोवध के निरोध के लिये बड़ी दक्षता से वे अपने उत्तमोत्तम प्रवचनों से प्रशासन एवं जनमानस को प्रेरित किया करते थे । ऐसे परम सरल सिद्ध महान् परिव्राजक सन्त दुर्लभ ही मिलते हैं । उनके सौम्य सुभग स्वरूप से वरवश लोग उनके मार्गदर्शन में राष्ट्र, संस्कृति और सनातन धर्म की सेवा में अभिरत हो जाते थे । प्रतिवादी पक्ष का सप्रमाण सटीक समाधान उनका अपूर्व कौशल था। ऐसे अमलात्मा महापुरुष की पावन सरणि पर अनुगमन हमारा कर्तव्य होना चाहिए ॥६१॥

(६२)

एवं अगणित वीरों की, भारत अनुपम भूमि ।
राष्ट्र-सुरक्षा नित कटिबद्ध, "शरण" समर में झूमि ॥

इस प्रकार असंख्य भक्त--वीरों, राष्ट्र--वीरों की यह भारत-वर्ष अनुपम भूमि हैं । देश की सर्वात्मना सुरक्षा के लिये ये सर्वदा कटिबद्ध--सन्नद्ध रहते हैं और समराङ्गण में झूम--झूम कर स्वयं को समर्पित कर विजयश्री प्राप्त कर लेते हैं ॥६२॥

(६३)

निज शरीर के सकल सुख, तजकर समर में जाय ।
घोर-युद्ध में राष्ट्र के, रक्षण "शरण" हित धाय ।।

अपने शरीर के समस्त सुखों को छोड़कर वे युद्ध भूमि में जाते हैं अपने राष्ट्र की सुरक्षा के लिये । ऐसे महाघोर युद्ध में केवल एकमात्र उनका यही लक्ष्य होता है कि किसी भी विधा से हम देश की सुरक्षा में सक्षम समर्थ हो सकें । वस्तुतः धन्य है उन राष्ट्र--वीरों को ।।६३।।

(६४)

कितना दुस्तर कार्य है, वीर - वरों का ध्येय ।
ये असीम यशस्वी हैं, "शरण" अपरिमित श्रेय ।।

युद्ध--भूमि में युद्ध करना अत्यन्त दुष्कर कार्य हैं, परन्तु वीरश्रेष्ठ कभी भी युद्ध से सशङ्कित नहीं होते, वे निरातङ्क होकर युद्ध करते हैं । उनका युद्ध--कार्य ही एकमात्र परम ध्येय और लक्ष्य होता है । इनको जितना श्रेय दिया जाय अतीव स्वल्प है । ऐसे वीरों से देश अत्यन्त गौरवान्वित है ।।६४।।

(६५)

असंख्य उत्तम वीरों ने, अर्पित कर दिये प्राण ।
अतिघोर युद्ध कर किया, "शरण" देश का त्राण ।।

इस प्रकार अगणित वीरों ने अपने देश की प्रतिष्ठार्थ घोर--तम युद्ध करते हुए अपने प्राणों का उत्सर्ग करके देश की पूर्णरूपेण रक्षा की है, इनके प्राणों की यह आहुति सर्वेश्वर श्रीहरि को भी उद्वेलित कर देती है ।।६५।।

(६६)

अनुपम ऐसे पावनवीर, निवसत हैं हरिधाम ।
जिनके स्मरणमात्र से, "शरण" स्वबोध ललाम ॥

कितने ही वीरों ने समर स्थल में अपने तन को समर्पित कर दिया और उसके फलस्वरूप वे जगन्नियन्ता करुणार्णव सर्वेश्वर श्रीहरि के पावन दिव्यधाम में निवास करते हैं, ऐसे श्रेष्ठ वीरों के स्मरणमात्र से हमें अपने स्वरूप का सुन्दर ज्ञान हो जाता है ॥६६॥

(६७)

इनका प्रबल प्रताप है, प्रबल कार्य अविराम ।
प्रबल तपस्वी-रूप हैं, "शरण" कहाँ विश्राम ॥

वस्तुतः इन भारत के शीर्षस्थ वीरों का अतिशय विलक्षण अद्भुत महाप्रबलतम प्रताप है जो आकृष्ट किये बिना नहीं रहता । अविराम गति से चलने वाला इनका युद्ध--कार्य भी परम प्रबल है । यथार्थ में इनका प्रबलतम तपस्वीरूप है । इनको प्रतिपल उसी युद्ध का चिन्तन, उसी का ध्यान, उसी का स्वप्न और फिर प्रत्यक्ष में पुनः युद्ध सचमुच इन्हें कहाँ विश्राम, कहाँ विराम इसीलिये तो वे पूर्णतः परम तपस्वी रूप ही हैं ॥६७॥

(६८)

न बुभुक्षा - पिपासा है, केवल एक सुलक्ष्य ।
शस्त्र-सुशोभित समर में, "शरण" शत्रु-दल भक्ष्य॥

उन वीरों को भूख--प्यास का पता नहीं उन्हें केवल एक ही लक्ष्य अर्थात् अपने कर्तव्य का पूर्णतया ध्यान और वह यह है कि

शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित होकर समराङ्गण में जाँय और उस अत्याचार परायण दुर्दान्त शत्रु समूह का संहार करें । वस्तुतः कितनी अनुपम देशनिष्ठा का यह उदाहरण है ।।६८।।

(६९)

जब-जब स्वकीय राष्ट्र पर, शत्रु ससक्त प्रहार ।
तब-तब उत्तम वीरों ने, "शरण" किया संहार ।।

जब--जब अपने देश पर विपरीत शत्रुओं द्वारा अत्यन्त प्रबलरूप से अपनी सेना पर प्रहार किया जाता है, तब--तब हमारे श्रेष्ठतम वीरों ने प्रत्युत्तर में शत्रुओं का जोरदार संहार किया है ।।६९।।

(७०)

समस्त भारतवर्ष के, विविध प्रान्त के वीर ।
राष्ट्र-सुरक्षा प्रबलतम, "शरण" चलावत तीर ।।

हमारे पूरे भारतवर्ष के अधिकांश समस्त प्रान्तों के वीरों ने राष्ट्र की सुरक्षार्थ अतिशय शक्ति--सामर्थ्य से अपने अस्त्रों से सही लक्ष्य पर निशाना लगाया हैं ।।७०।।

(७१)

भारत में भी राजस्थान, वीरों का है धाम ।
यहाँ अगणित वीरों ने, "शरण" तजा तन-वाम ।।

भारत में भी राजस्थान वीरों का धाम अर्थात् सर्वोत्तम केन्द्र है । यहाँ अगणित वीरों ने अपने अमूल्य--जीवन का देशहित में सहर्ष उत्सर्ग किया है और साथ ही अपने परिवार एवं अपनी सहधर्मिणी की

ममता का त्याग कर अपने प्राणों की आहुति अकल्पनीय घटना है जिसमें राजस्थान सर्वाग्रगण्य है ॥७१॥

(७२)

निज-निज घर में नर-नारी, निवसत है निश्शङ्क ।
परम ससक्त वीरों का, "शरण" प्रभाव अपङ्क ॥

अपने देश के समस्त नगरों--महानगरों--ग्रामों आदि में रहने वाले आबालवृद्धवनिता--समुदायजन निर्भय होकर विश्राम निवास करते हैं जिसका प्रमुख हेतु अति बलवान् वीरों का निर्विकार प्रभाव है उसी के फलस्वरूप हम अपने घर बैठे आनन्द का अनुभव करते हैं । इसका मूल रहस्य हमारे श्रेष्ठतम वीर--महापुरुष विद्यमान है जिनके असीम प्रभाव का प्रत्यक्ष दर्शन होता है ॥७२॥

(७३)

सम्प्रति भारतवर्ष की, सीमा पर है युद्ध ।
साधा भारत-वीरों ने, "शरण" लक्ष्य अतिशुद्ध ॥

इस वर्तमान समय में अपने स्वदेश भारत की पवित्र सीमा पर पाकिस्तान के घुसपैठियों द्वारा नियन्त्रण-रेखा का अतिक्रमण करते हुए युद्ध प्रारम्भ हो गया है, जिसके प्रत्युत्तर में हमारे भारत के मूर्द्धन्य अति-कुशल वीरों ने बड़ी ही प्रवीणता और सही रूप में अपने श्रेष्ठ-अस्त्रों से लक्ष्य साधा है जिसे देख शत्रु--सैनिक सशङ्कित हो गये । यह देश के लिये परम गौरवास्पद क्षण है जो देश के वीरों से सम्पादित हो रहा है ॥७३॥

(७४)

अपरिमेय है इनका बल, करत शत्रु-संहार ।
विजय सुनिश्चित भारत की, 'शरण' वीर हिय धार॥

भारत के इन वीरों का बल असीम और महान् है, जो बड़ी ही प्रवीणता से शत्रु--सेना को विफल कर रहे हैं और उनकी प्रबल शत्रु सेना को धराशायी कर रहे हैं । इनके महा पराक्रम से निस्सन्देह भारत की विजयश्री सुनिश्चित है । ऐसे वीरवरेण्य भारत की सम्पूर्ण जनता के हृदयस्थल में सुशोभित हैं ।।७४।।

(७५)

शत्रु-सेना आधुनिक, करती अस्त्र-प्रहार ।
उसका उत्तर प्रबलतम, "शरण" मिलत संहार ।।

पाकिस्तान शत्रु--सेना द्वारा अत्याधुनिक अस्त्रों का अतिशय प्रहार हो रहा है, जिसका प्रत्युत्तर हमारी भारतीय वीरसेना द्वारा उन्हें मिल रहा है जिसके फलस्वरूप वे भूमिसात् होते जा रहे हैं । जिससे हमारे वीर सर्वदा समादरणीय और अभिवन्दनीय हैं ।।७५।।

(७६)

वीराङ्गना भी घर बैठे, करती श्रीहरि-ध्यान ।
जिससे वीर बलशाली, "शरण" करैं सन्धान ।।

वीर--मातायें अपने पवित्र--घर में गृह--कार्य संलग्न पूर्वक जगन्नियन्ता सर्वाधार परमदयानिधि सर्वेश्वर श्रीहरि का अपने शुद्धान्तःकरण से मंगलमय ध्यान में उनके स्मरण, चिन्तन में तत्पर हैं, जिससे हमारे महाबलशाली वीर--वरेण्य शत्रुओं पर सही सन्धान अर्थात् अपने सही लक्ष्य पर अस्त्रों का प्रयोग करने में समर्थ होते हैं । वस्तुतः ऐसी मातायें सर्वदा वन्दनीय हैं ।।७६।।

(७७)

समस्त धर्माचार्य भी, सन्त-महन्त-विद्वान ।
भावुक-जनता वीर हित, 'शरण' करत प्रभु ध्यान॥

सभी यावन्मात्र सम्प्रदायों के धर्माचार्यप्रवर तथा सन्त--महात्मावृन्द और विद्वत्समुदाय तथा भारत की समस्त धर्मप्राण जनता भी वीरों के मङ्गल हितार्थ अपने--अपने परम इष्ट सर्वेश्वर के पावन ध्यान में अनवरत प्रवृत्त हैं जिससे भारत--वीरों को अपार शक्ति और सामर्थ्य प्राप्त होगा ॥७७॥

(७८)

सर्वेश्वरप्रभु आश्रय से, वीर बने बलवान ।
सकल वीरगण सफल हों, "शरण" मिलैं सन्मान ॥

श्रीसर्वेश्वर प्रभु के अवलम्ब से उनकी परमकृपा से हमारे समस्त वीर अत्यन्त शक्तिशाली एवं बलवान बने और वे इस वर्तमान कारगिल क्षेत्र में चल रहे समर--संघर्ष में पूर्णतया सफल हों तथा ऐसेउत्तम वीरों को सर्वविध रूप से सन्मान प्राप्त हो, यही अपने मानस में पुनीत भाव प्रस्फुटित है ॥७८॥

(७९)

उन वीरों के मात-पित, परम धन्यतम जान ।
जिन घर प्रकटे वीरवर, "शरण" परम बलवान ॥

वे माता--पिता परम धन्यवादार्ह हैं जिनके मङ्गलमय घर में ऐसे परमवीर प्रकट हुए जो अतिशय बलवान शौर्य सम्पन्न आदर्श-रूप हैं । वस्तुतः ऐसे परम सौभाग्यशाली माता--पिता सर्वदा ही अभि-वन्दनीय हैं ॥७९॥

(८०)

वह राष्ट्र भी गौरव का, अनुभव करता नित्य ।
स्वदेश-भक्तवीरों की, "शरण" प्रभा-आदित्य ॥

वह राष्ट्र वह देश सदा ही अपने परम गौरव का अनुभव करता है, जिस अपने देश के भावुक--भक्त वीरों की सूर्यप्रभा की भाँति दिव्यकान्ति को धारण किये वे पूर्णतः प्रकाशमान हैं ॥८०॥

(८१)

भारत सक्षम शासक भी, कभी न विचलित होय ।
सभी समस्या समाधान, "शरण" कभी ना सोय ॥

भारत के समर्थ शासक वर्ग भी ऐसी भयावह अतिदुरूह वि५रीत परिस्थति आने पर वे अपने कर्तव्यपथ से विचलित नहीं होते और नहीं वे विश्राम ही करते, अविराम रूप से देश--सुरक्षा के विविध उपायों का अवलम्ब लेते हैं तो सम्पूर्ण विरुद्ध अकल्पनीय विकटतम समस्याओं का समाधान फिर स्वतः सहज है ॥८१॥

(८२)

वीरों का यह परम तप, कठिन-कार्य में लाभ ।
हनुमत भाँति श्रीहरि का, "शरण" समाश्रित आभ ॥

वीरों के इस कठोरतम तप से महाकठिन कार्य में भी सहज लाभ है । भक्तशिरोमणि श्रीहनुमान्जी महाराज की भाँति सर्वाधार सर्वेश्वर श्रीहरि का सर्वात्मना समाश्रय लेने पर अपनी आभा--प्रभा स्वतः विकसित होकर विश्व को प्रकाशित कर देती है ॥८२॥

(८३)

राघवेन्द्र श्रीराम के, आश्रित श्रीहनुमान ।
महायुद्ध में विजयश्री, "शरण" शास्त्र प्रमान ।।

अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायक राजीवलोचन नयनाभिराम राघवेन्द्र भगवान् श्रीराम के युगलचरणारविन्दों के सर्वदा समाश्रित रहने वाले महाबली भक्ताग्रगण्य श्रीहनुमान्जी ने अनेक महायुद्धों में विजयश्री प्राप्त की, जिसका श्रीराम पराभक्ति ही प्रधान हेतु था । श्रीहनुमान्जी का पावन चरित श्रीरामायणादि अनेक ग्रन्थों में वर्णित है । इसी प्रकार हमारे वीरों को भी उसी प्रकार इष्ट--बल प्राप्त करना परम अभीष्ट है ।।८३।।

(८४)

जो जन प्रभु अवलम्ब लै, देशभक्ति में लीन ।
वह सर्वत्र सफल सदा, "शरण" प्रबल प्रवीन ।।

जो बुद्धिमान् विवेकी मानव सर्वान्तरात्मा श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु का आश्रय लेकर अपने देश की निस्स्वार्थ भक्ति में सश्रद्ध तल्लीन तत्पर रहता है, वह अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में सर्वरीत्या पूर्ण सफलता प्राप्त करता है । ऐसें अतिशय कुशल देश--भक्त, श्रीहरिभक्त सर्वदा प्रपूज्य हैं ।।८४।।

(८५)

निज-गृह सुख को त्यागकर, राष्ट्र-सुरक्षा-बद्ध ।
सतत वे अभिवन्दनीय, "शरण" शत्रु अवरुद्ध ।।

जो वीर अपने घर के सभी सुख--वैभव को छोड़कर अपने देश की सुरक्षा--सेवा में लगे हैं वे सर्वदा अभिवन्दनीय समादरणीय

हैं। उनके ही प्रखर प्रभाव से उन शत्रुओं की शक्ति क्षीण और वे अवरुद्ध हो जाते हैं फिर वे अपनी ओर दृष्टिपात करने में भी सक्षम नहीं हो सकते ॥८५॥

(८६)

सर्वेश्वर से कामना, करते हैं दिनरात ।
वीरवृन्द सब सफल हों, "शरण" टेक रख बात ॥

हम सभी सन्त--महात्मा--विद्वान्--धर्माचार्य--भक्तजन एवं पूरे स्वदेश के जन--जन भगवान् श्रीसर्वेश्वर से दिनरात यही मंगलकामना करते हैं कि देश सुरक्षार्थ समर स्थल पर युद्ध परायण हमारे वीर--योद्धाओं को पूर्ण सफलता मिले जिससे देश का गौरव यथावत् प्रतिष्ठित रहे ॥८६॥

(८७)

राधामाधव के सरस, परम मधुरतम नाम ।
शुभ संकीर्तन करत ही, "शरण" सिद्धि अविराम ॥

श्रीवृन्दावनविहारी युगलकिशोर श्रीराधामाधव प्रभु के अति सरस परम मधुरातिमधुर दिव्यातिदिव्यतम महामङ्गलमय नामों का तन्मयता पूर्वक संकीर्तन किया जाय तो ऐसे वीर--योद्धा को अपनी अभीष्ट सिद्धि में किसी प्रकार का अवरोध ही नहीं, वह तो ऐसे पुरुष को निरन्तर रूप से स्वतः वरण करने को उद्यत रहती है ॥८७॥

(८८)

श्रीशिव-शङ्कर-प्रार्थना, कभी न निष्फल होय ।
दुर्गा-भवानी-वन्दना, "शरण" कृपा संजोय ॥

चन्द्रमौली शूलपाणि आशुतोष भगवान् शङ्कर के चरणाम्बुजों में की गई प्रार्थना कभी भी विफल नहीं होती, वे कृपापयोधि दयार्णव प्रभु अपने शरणापन्न भक्त पर अवश्य ही कृपा करते हैं । इसी प्रकार पराम्बाशक्ति श्रीदुर्गा--भवानी की वन्दना भी वीरों को असीम शक्ति प्रदान करती है, अतः उनकी दिव्य--कृपा प्राप्ति हेतु उनकी प्रार्थना--वन्दना करना हमारा उत्तम लक्ष्य हो ॥८८॥

(८९)

समर-भूमि में वही सफल, इष्ट-ध्यान कर जाय ।
देश-भावना अन्तर धर, "शरण" कृपा प्रभु-पाय ॥

वही वीर अपने युद्ध--स्थल में पूर्ण सफल होता है जो अपने इष्ट का अर्थात् अपने उपास्यदेव का स्वकीय--हृदय में ध्यान करके देशनिष्ठ होकर युद्ध--भूमि में जाय । तभी वह अनन्त--कृपाकोष सर्वेश्वर श्रीहरि की परम कृपा की उपलब्धि कर सकता है ॥८९॥

(९०)

चक्रव्यूह की रचना कर, कुशल कलाविद पूर्ण ।
युद्ध-स्थल में परम धैर्य, "शरण" लक्ष्यविद तूर्ण ॥

कुशल वीरों का कर्तव्य है कि वे युद्ध भूमि पर परम धैर्य पूर्वक सुन्दर चक्रव्यूह की रचना करके अपनी कुशल कलाओं से परिपूर्ण होकर युद्धारम्भ करें और अति तीव्र गति से अपने अस्त्रों का सम्यक् प्रयोग करें तथा युद्ध के नियमों को समझ कर उसमें प्रवृत्त हों जिससे सफलता में कोई विघ्न न रहे ॥९०॥

(६१)

समराङ्गण में परम पटु, उचित स्थान को देख ।
तब युद्ध का शुभारम्भ, "शरण" कथन आलेख ॥

समर भूमि पर युद्ध करने में अतीव प्रवीण हो, युद्ध के समय उचित स्थान जहाँ से सुविधापूर्वक अपने अस्त्रों का प्रयोग किया जा सके, इस प्रकार सम्पूर्ण स्थिति समझ कर ही युद्ध में भाग लें, यह युद्ध-शास्त्रीय--वक्तव्य यहाँ उल्लिखित किया गया है ॥६१॥

(६२)

मात-पिता-गुरुजन सदा, प्रभु मानस कर ध्यान ।
निज-गेहनी शुभ-कामना, "शरण" वीर बलवान ॥

अपने माता--पिता एवं श्रेष्ठ गुरुजनों और सकलनियन्ता सर्वेश्वर प्रभु का अपने चित्त में सुन्दर ध्यान करके तथा अपनी सहधर्मिणी गृहस्वामिनी पत्नी की मंगल--कामना करें तो वे वीर पुरुष निश्चय ही अदम्य साहस और बल की उपलब्धि करने में सक्षम हो सकते हैं ॥६२॥

(६३)

पुराकाल में वीरों की, वसुधा - भारतवर्ष ।
अद्यापि वह पूर्ववत्, "शरण" प्रतिष्ठित तर्ष ॥

भारत की पवित्र धरा प्राचीनकाल से ही वीरों की स्थली रही है और इस वर्तमान समय में भी वह पूर्ववत् अर्थात् सदा की भाँति अपनी उत्तम प्रतिष्ठा लिये हुए है, जिसके दर्शनों की तर्ष अर्थात् स्पृहा बनी ही रहनी चाहिए ॥६३॥

(६४)

वीर-अर्जुन योद्धा ने, जो वरषाये तीर ।
शत्रु-सेना ने बहाये, "शरण" नेत्र से नीर ।।

महाभारत युद्धकाल में जब अजेय वीरवरेण्य अर्जुन ने अपने दिव्य गाण्डीव धनुष् से असंख्य वाणों की वर्षा की तो उस समय कौरव शत्रु--सेना ने अति भयाकुल होकर अपने नेत्रों से अश्रुओं की झड़ी लगादी । वीरों का प्रभाव ही विलक्षण होता है ।।६४।।

(६५)

महावीर अभिमन्यु ने, किया अति घोर युद्ध ।
महारथी व्याकुल हुये, "शरण" वीर लख क्रुद्ध ।।

उसी महाभारत युद्ध में श्रीगुरुद्रोणाचार्य द्वारा रचित अभेद्य चक्रव्यूह जिसका धनञ्जय--अर्जुन के पुत्र महावीर अभिमन्यु ने अति कौशल के साथ महाभीषण युद्ध करते हुए बड़ी सुगमता से भेदन कर दिया । जिसके महाकोप को देख चक्रव्यूह के सप्तद्वार पर खड़े सप्त--महारथी अत्यन्त व्याकुल भयावह हो गये । उस षोडशवर्षीय वीरवरेण्य अभिमन्यु का कितना प्रबल पराक्रम था व्यक्त करना कठिन है ।।६५।।

(६६)

वर्तमान में वीरों ने, जो दरशाया दृश्य ।
रौद्ररूप लख दुरितजन, "शरण" हुये अदृश्य ।।

इस समय देश में कारगिल में भारतीय वीरों ने जो समर-दृश्य को प्रकट किया वह अतीव अद्भुत था । यहाँ के वीरों का भयङ्कर दृश्य देख कर पाकिस्तान के दुष्ट सैनिक भाग खड़े हुए और दूर जाकर पर्वतों की आड में छिप गये ।।६६।।

(९७)

आज देश की सीमा पर, शत्रु-अडा है व्यर्थ ।
काश्मीर भारत-अङ्ग है, "शरण" शत्रु असमर्थ ॥

वर्तमान में हमारे देश की उत्तराञ्चल सीमा पर पाकिस्तान शत्रु बनकर व्यर्थ में अडा है । काश्मीर भारत का स्वाभाविक अङ्ग है, उस पर आधिपत्य जमाने का स्वप्न देखना निरर्थक है । शत्रु सभी प्रकार असमर्थ होते हुए भी अत्याचार परायण हो रहा है, जिसका परिणाम उसके लिये सदा भयावह रहेगा ॥९७॥

(९८)

भारत शान्ति सम्पोषक, अस्त्र-शस्त्र भरपूर ।
अतिशय सक्षम होने पर, "शरण" युद्ध से दूर ॥

हमारा भारतवर्ष विविध प्रकार के सामरिक अस्त्र--शस्त्रों से परिपूर्ण है और सर्वविध से अत्यन्त समर्थ भी है तथापि वह सर्वदा शान्ति का ही पोषक रहा है और युद्ध से भी निरन्तर दूर ही रहता है । वस्तुतः यही हमारे देश का सर्वोच्च स्वरूप है ॥९८॥

(९९)

अतुलित वैभव सेना भी, अगणित योद्धा वीर ।
तथापि शान्ति पोषक है, 'शरण' प्रशासक धीर ॥

भारत के पास असीम वैभव और विपुल सेना, असंख्य वीर योद्धा आदि होने पर भी यहाँ के उत्तम प्रशासक धीर--पुरुष अनवरत अत्यन्त शान्ति को ही सर्वदा महत्व देते हैं और उसी के लिये सतत प्रयत्नशील रहते हैं ॥९९॥

(१००)

सर्वदा विजयी भारत, सकल दृष्टि से पूर्ण ।
समागत शत्रु यूथ का, "शरण" सहज ही चूर्ण ।।

हमारा भारत सर्वदा विजयी रहा है, वह सभी दृष्टि से परिपूर्ण है अर्थात् किसी भी वस्तु का यहाँ अभाव नहीं है । वह समागत शत्रु-दल का बड़े ही सहज रूप में चूर्ण अर्थात् उसका सर्वतोभावेन परिदमन कर देता है ।।१००।।

(१०१)

अधुना योद्धा-वीरगण, सीमा पर सन्नद्ध ।
प्रबल-शक्ति से शत्रु को, 'शरण' नशत व्रतबद्ध ।।

इस समय भारत की कारगिल सीमा पर तथा अन्य संलग्न क्षेत्रीय सीमा पर भी हमारे वीर--योद्धा महानुभाव सर्वप्रकार से सुरक्षार्थ कटिबद्ध हैं । इस समय कारगिल में चल रहे घुसपैठियों के प्रबल--उपद्रव का अपने व्रतबद्ध अर्थात् अपने सत्संकल्प के साथ अपनी पूर्णशक्ति से उनके प्रणाश पर तत्पर हैं ।।१०१।।

(१०२)

साश्चर्य विचार हो रहा, शत्रु टिका है व्यर्थ ।
तृतीय बार भी हार है, "शरण" सदा असमर्थ ।।

यह बड़े आश्चर्य का विषय है कि पाकिस्तान जो सम्प्रति शत्रु स्वरूप में स्थित है वह अकारण ही सीमा पर उपद्रव कर रहा है । पहले वह दो बार पराजित हो चुका है, अब वह तृतीय बार भी सभी प्रकार पराजित होकर व्यर्थ में ही व्यथा का अनुभव करेगा । वह असमर्थ होते

हुए भी बार--बार भारत पर आक्रमण की योजना बनाकर अकारण उपद्रव में तत्पर है ॥१०२॥

(१०३)

अशिष्ट-पाकिस्तान ने, किया घोर अपराध ।
भारत से सब विभव ले, "शरण" युद्ध संसाध ॥

सद्--व्यवहार का जिसे तनिक भी बोध नहीं ऐसे पाकिस्तान देश ने सीमा पर युद्ध ठान कर अक्षम्य महा अपराध किया है । भारत से ही विभाजन काल में यहाँ की विपुल--सम्पदा प्राप्त कर अब भारत से ही अकारण बारम्बार युद्ध का सूत्रपात कर जो अनिष्ट कर रहा है जिसकी विश्व के सभी राष्ट्र निन्दा कर रहे हैं ॥१०३॥

(१०४)

पाकिस्तान ने पूर्व भी, करा समर दो बार ।
चीन ने भी व्यर्थ में, "शरण" समर-संचार ॥

सबसे प्रथम चीन देश ने भारत से निरर्थक युद्ध किया, उसके पश्चात् फिर पाकिस्तान ने दो बार युद्ध करके उभय-पक्षीय विनाश के साथ उसे पराजित होना पड़ा । वास्तव में यह कितनी बड़ी अज्ञानता और भूल है कि इस प्रकार संघर्ष करके कैसे सुख की कल्पना की जा सकती है ॥१०४॥

(१०५)

उस समय भी वीरों ने, किया पाक प्रतिकार ।
चीन को तब दिखा दिया, 'शरण' समर परिहार ॥

उस समय भी हमारे भारतीय--वीरों ने चीन और पाकि-स्तान को युद्ध में अपना प्रभाव दिखाया जो विश्वविदित है । हमारे वीर अपने

उद्देश्य को पूर्ण करने में निरन्तर सफल रहते हैं, ऐसे उत्तम वीरों के उच्चस्तरीय पवित्र आदर्शपूर्ण कार्य से अपना देश सर्वदा गौरवान्वित रहा है ॥१०५॥

(१०६)

भारत पावन देश पर, कुदृष्टि करते अज्ञ ।
उनका कभी भी न भला, "शरण" बने हतप्रज्ञ ॥

इस परम पावन देश--भारत पर जो भी कोई परराष्ट्र कुदृष्टि का प्रयोग करता है वह यथार्थ में सर्वथा अविवेकी मतिहीन अज्ञ है, ऐसे इतर देश किंवा इतरजनों की त्रिकाल में भी भलाई नहीं है । सर्वनियन्ता सर्वज्ञ सर्वेश्वर भी एवंविध राष्ट्रों का अभ्युदय नहीं करते ॥१०६॥

(१०७)

अतुलित प्रचण्ड रूप से, भारत के पटु-वीर ।
शत्रु को विचलित करैं, "शरण" स्वयं न अधीर ॥

भारत के अतिकुशल वीर बड़े ही प्रचण्ड रूप से समरभूमि में शत्रु--सेना को विचलित कर देते हैं तथा स्वयं कभी भी अधीर नहीं होते, निर्भय होकर अति तत्परता से शत्रुओं को परास्त कर देते हैं, यह हमारे लिये अत्यन्त गौरव का प्रसङ्ग है ॥१०७॥

(१०८)

पुराकाल में भारत-वीर, किया स्वर्ग-सहयोग ।
उसका शास्त्र-प्रमाण है, "शरण" स्वदेश-सुयोग ॥

प्रचीनकाल में भारत के प्रबल पराक्रमी वीर जब स्वर्गलोक में देवता आसुरी शक्ति से भयभीत हो जाते तब स्वर्गीय देववृन्द भूलोक से

वरेण्य अजेय वीर--नरेन्द्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त कर युद्ध में असुरों पर विजय प्राप्त करते थे । पुराणादि शास्त्रों में ऐसे अनेक उदाहरण है । वस्तुतः ऐसा सुयोग इस भारत को मिलता रहा है ॥१०८॥

(१०६)

इन्द्रादिक सुरवृन्दों को, असुर-युद्ध में योग ।
भारत के तब वीरों ने, "शरण" दिया तज-भोग ॥

इन्द्रादि देवताओं को जब असुरों से युद्ध करना पड़ता और वे उसमें विफलता का अनुभव करते तब देवेन्द्र की याचना से इस भूलोक पर सुशोभित अतिसुरम्य भारतवर्ष के वीर--नरेन्द्रों ने अपना वैभव सुख--सामग्री को छोड़कर स्वर्ग में पहुँच कर इन्द्रादि देवगणों को असुरों के महाप्रलयंकारी भीषण युद्धों में अपने दिव्य वाणों से उनको परास्त कर देवताओं की विजय में अपनी सर्वोत्कृष्टता अर्जित करते थे ॥१०६॥

(११०)

अर्जुनादिक वीरवृन्द, करी सुरेन्द्र-सहाय ।
परम अभेद्य वाणों की, "शरण" वृष्टि कराय ॥

आवश्यकता होने पर समय--समय पर अर्जुनादि महाबलिष्ठ वीरों ने भारत--वसुन्धरा से स्वर्ग पहुँच कर देवराज इन्द्र की सुरासुर--युद्ध अपने परम दिव्य अभेद्य वाणों की वर्षा करके पूर्ण सहयोग के साथ असुरों का संहार कर इन्द्र को विजयश्री से अलंकृत किया । यह है भारत के महावीर योद्धाओं का लोकोत्तर स्वरूप जो इस संसार में सर्वदा स्मरणीय परम प्रेरणाप्रदायक है ॥११०॥

(१११)

परमोत्तम वीर-गाथा, सुन-सुन देश निहाल ।
ऐसे वीर-योद्धा पर, "शरण" गर्व तत्काल ॥

ऐसे सर्वश्रेष्ठ वीरों की पवित्रम प्रेरणादायिनी कथा के श्रवण से देश अपने सौभाग्य की सराहना करता है । इन पवित्रात्मा वीर--योद्धाओं के कल्याणकारी चरित के सुनते ही उसी क्षण अपना पूरा राष्ट्र अनुपम गर्व का अनुभव करता है ॥१११॥

(११२)

न भूलो उन वीरों को, अर्पित स्वदेश काज ।
जय बोलो जय उच्चस्वर, "शरण" श्रेष्ठ वनराज ॥

जिन वीरों ने स्वदेश के लिये अपने आपको समर्पित कर दिया, ऐसे परम यशस्वी वीरों के उपकार को उनके उत्तम स्वरूप को कभी भी विस्मृत न करें, वे सदा सर्वदा सर्वात्मना स्मरणीय एवं अभिवन्दनीय हैं, ऐसे पुण्यश्लोक वीरों की उच्चस्वर से जय की मङ्गलमयी ध्वनि करके गगनमण्डल को अभिगुञ्जायमान करदें, यथार्थ में अरण्य-प्रान्त में जिस प्रकार निर्भय होकर वनराज सिंह दहाड़ते हैं वैसे ही ये देश-रक्षक वनराजरूप अति बलवान् हमारे वीरवृन्द हैं जिनके जयघोष से शत्रु-सेना प्रकम्पित हो जाती है ऐसे इन वीरों की मुर्हुमुहुः जय जयकार हो ॥११२॥

(११३)

जो हताहत होगये, उनकी करो सहाय ।
तन-मन-धन अथ सर्वविध, "शरण" त्वरित उपाय ॥

जो वीर हताहत हो गये हैं उनकी तन--मन--धन आदि सर्वविध रूप से सहायता करें । और ऐसा उपाय अत्यन्त शीघ्र ही करें जिससे उनको उनके परिवारजनों को अपनी यथोचित सेवा अर्पित कर आप हम सब परम गौरव एवं परम सौभाग्य का अनुभव करें ॥११३॥

(११४)

विकट कष्ट को निकटतम, सहज भाव से देख ।
कदापि चिन्तित हैं नहीं, "शरण" ध्यान है रेख ॥

युद्ध के भयावह कष्ट को अति समीप सहज भाव से देखकर वे कदापि विचलित नहीं होते, उनको इसका लेशमात्र भी चिन्तन नहीं । एकमात्र उनका ध्यान केन्द्रित है अपने देश की सीमा--रेखा पर । किसी प्रकार शत्रु हमारे राष्ट्र की नियन्त्रण रेखा का उल्लंघन न करें, बस यही उनका प्रमुखतम ध्येय, गेय एवं लक्ष्य रहता है ॥११४॥

(११५)

निश्चय ऐसे वीरों पर, भारत करता गर्व ।
सर्वेश्वर से प्रार्थना, "शरण" सुरक्षित सर्व ॥

ऐसे देश के उत्तम वीरों पर भारत को निश्चय ही पूर्णतः गर्व है और भगवान् श्रीसर्वेश्वर से यही पुनः--पुनः प्रार्थना करते हैं कि वे सभी योद्धा वीरवरेण्य सर्वतोभावेन युद्ध स्थिति में सुरक्षित रहें ॥११५॥

(११६)

एकमात्र अवलम्ब है, एकमात्र आधार ।
सकल सृष्टि के सम्पोषक, "शरण" प्रभु-प्राकार ॥

वीरजन समस्त प्रकार से सुरक्षित रहें इसके लिये एकमात्र सकल सृष्टि के परिपालक श्रीप्रभु ही अवलम्ब हैं, वे ही परम आधार हैं और वे

परम दृढ़ प्राकार स्वरूप भी हैं, उनकी प्रार्थना ही हम सबों के लिये समग्रतया सर्वस्व है ॥११६॥

(११७)

वीर हमारे न पीछे, सन्मुख रिपुदल-पास ।
उनको अपने अस्त्रों से, "शरण" करहिं अति ह्रास ॥

हमारे वीर कभी भी पीछे की ओर नहीं जाते, वे शत्रुओं के सन्मुख अति निकट अविचल रूप से युद्ध में स्थित रहते हैं और अपने प्रखर अस्त्रों से उनका सभी प्रकार से अत्यन्त ह्रास कर रहे हैं ॥११७॥

(११८)

भारत विज्ञानवेत्ता, करहिं अस्त्र निर्माण ।
जिनके उत्तम अस्त्र से, "शरण" शत्रु हतप्राण ॥

हमारे भारत राष्ट्र के ऐसे श्रेष्ठतम विज्ञान मर्मज्ञ कुशल वैज्ञानिकों के द्वारा उत्तमोत्तम अणुशक्ति सम्पन्न प्रक्षेपणास्त्रों का निर्माण बड़ा ही अद्भुत हैं जिनके अनुपम दिव्यास्त्रों से शत्रुसमूह तत्काल निष्प्राण हो जाते हैं, हमारे ऐसे उत्कृष्ट वैज्ञानिकों पर पूरे देश को महान् गर्व है ॥११८॥

(११९)

भारत-जन चाहते हैं, दर्शन करैं उन वीर ।
जो निरन्तर युद्ध में, "शरण" सन्नद्ध धीर ॥

सभी भारतवासी जन चाहते हैं कि ऐसे श्रेष्ठतम वीरों के हम दर्शन करें, जो देश के लिये देश प्रतिष्ठा--गौरव के लिये युद्ध--क्षेत्र में कटिबद्ध होकर बड़े धैर्य पूर्वक युद्ध में अविराम रूप से तत्पर हैं ॥११९॥

(१२०)

भारत श्रेष्ठीवर्ग का, शुभ कर्तव्य महान ।
विपुल रूप में अर्थ का, "शरण" करैं अनुदान ।।

भारत के बड़े--बड़े श्रेष्ठ व्यवसायी उद्योगपति सेठ महानुभावों का मङ्गलमय कर्तव्य है कि वे देश--सुरक्षार्थ अपने पवित्र द्रव्य का सहर्ष दान करें जिससे राष्ट्र के वीरों को पर्याप्त बल मिले ।।११७।।

(१२१)

विद्वानों को चाहिये, करैं मन्त्र नित जाप ।
वीरजनों हित यज्ञ हो, "शरण" स्वतः बल आप ।।

ऐसे संकटकाल में विद्वज्जनों का पूर्ण कर्तव्य है कि वे अपने-अपने उपास्य इष्ट--मन्त्र का जप, पाठ, अनुष्ठान आदि करें और सन्त-महात्माओं एवं देश की जनता का परम कर्तव्य है कि वे सात्विक उत्तम भगवदीय--यज्ञों का माङ्गलिक आयोजन करें जिससे भारत के वीर--योद्धाओं को पर्याप्त शक्ति--सामर्थ्य मिले ।।१२१।।

(१२२)

प्रबलशक्ति से वीरजन, युद्ध करत अतिघोर ।
न भोजन विश्राम है, "शरण" समर निशि-भोर ।।

हमारे परमवीर महानुभाव अपनी प्रबल शक्ति से अत्यन्त घोर युद्ध में तन्मयता से तत्पर हैं, कहाँ समय पर भोजन और विश्राम है, वे रात--दिन समराङ्गण में सतत देश रक्षार्थ सन्नद्ध है ।।१२२।।

(१२३)

वह मातृशक्ति अतिधन्य, जिन प्रकटे ये वीर ।
उनका सुयश असीम है, "शरण" कभी न अधीर ।।

वस्तुतः वह मातृशक्ति परमधन्य है जिन्होंने ऐसे उत्तम वीरों को जन्म दिया । इस मातृशक्ति का सुयश असीम अपार है, वे वीरों के देश हित बलिदान होने पर भी कभी अधीर नहीं होती, ऐसी मातृशक्ति की सदा ही जय हो ॥१२३॥

(१२४)

"मातृदेवो भव" प्रथम, वेद करत उद्घोष ।
सतत श्रुति-वच वदत है, "शरण" चरण उन पोष ॥

हमारे सर्वोपरि अपौरुषेय भगवद्वाणी वेदशास्त्र डिण्डिम उद्घोष करते हैं--**मातृदेवो भव** अर्थात् हमारी मातृशक्ति का स्वरूप सर्वोत्तम है, माता की सेवा निष्ठापूर्वक करें, उनकी पवित्र आज्ञा का अनुपालन करें । श्रुतिवचन निरन्तर निर्देश करते हैं कि माता के चरणों में नमन पूर्वक उनकी परिचर्या करना हमारा परम धर्म और महत्वपूर्ण कर्तव्य है ॥१२४॥

(१२५)

जिस माता ने व्रत लिया, देश-काज हित पूर्ण ।
उसका वर्णन अशक्य है, 'शरण' सिद्धि अतितूर्ण ॥

जिस माता ने देश की मङ्गल--कामना के लिये उत्तम व्रत--अनुष्ठान प्रारम्भ किया, यथार्थतः उनकी महिमा का वर्णन कठिन है । उन माताओं को अपने पावन--व्रत की सिद्धि भी अविलम्ब ही प्राप्त हो जाती है । ऐसी माताओं का माहात्म्य निश्चय ही मननीय हैं ॥१२५॥

(१२६)

अस्त्र-शस्त्र-अथ तन्त्र से, मन्त्र-शक्ति-करपाश ।
मातृशक्ति सब कुछ करै, "शरण" शत्रु-प्रणाश ॥

विविध प्रकार के अस्त्र--शस्त्रों, तान्त्रिक विद्याओं, मन्त्र-शक्ति से, करपाश शक्ति से हमारी मातृशक्ति सब कुछ करने में पूर्णतः समर्थ है, और वह इस प्रकार शत्रु का विनाश सहज में कर सकती है, अतः मातृशक्ति की महिमा परमाद्भुत है ॥१२६॥

(१२७)

बल सञ्चय नित करो, हरि-चिन्तन अविराम ।
निश्चय शत्रु-शमन हो, "शरण" भजन बलराम ॥

बल सञ्चय प्रतिदिन करना चाहिए और निरन्तर भगवत्स्मरण एवं अनन्त--बलधाम श्रीबलरामजी का भजन हो तो निश्चयात्मकरूप से शत्रु का शमन सरलता से हो जाता है ॥१२७॥

(१२८)

काश्मीर अविभाज्य अङ्ग, भारत का है मूल ।
उसकी सीमा पर अड़े, "शरण" शमन शिव-शूल ॥

काश्मीर भारत का अविभाज्य अङ्ग है, वह मूलतः भारत का ही भाग है, उसकी सीमा पर जो भी अड़ेगा उसके परिशमन के लिये शिवशूल पर्याप्त है ॥१२८॥

(१२९)

कारगिल निज क्षेत्र में, सीमा रेखा देख ।
तदुलंघन है अहितकर, "शरण" विधान-सुलेख ॥

भारत के कारगिल-क्षेत्रीय नियन्त्रण सीमा रेखा निर्धारित है, उसको भली प्रकार देखो उसका उल्लघंन करना और भारत की सीमा को पार करके उसके भाग को अपने क्षेत्र में मिलाना पाकिस्तान के लिये

सदा ही अहितकर है । भारत के संविधान में वर्णित आलेख में पूर्व निर्धारित सीमा रेखा सुव्यवस्थित है, उसको तोड़कर भारत के क्षेत्र में आधिपत्य जमाना अक्षम्य अपराध है जिसका हमारे सीमा पर कटिबद्ध सैनिक भलि प्रकार से उत्तर दे रहे हैं ॥१२९॥

(१३०)

अटल अटल है सीमा पर, करत शंख शुभनाद ।
विहारी कुशल नीतिविद, "शरण" कृष्ण नित याद॥

भारत की सीमा पर अटल रूप से अटल हैं, उन विहारी के द्वारा युद्धार्थ शंख का शुभनाद किया जा रहा है, वे परम कुशल नीतिज्ञ श्रीकृष्णचिन्तननिरत हैं तो फिर देश को कहाँ भय है,--**यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवानिति-र्मतिर्मम** ॥ यह श्रीमद्भगवद्गीतोक्त वचन हमें सभी भयों से मुक्ति कराता है तथा वहाँ विजयश्री स्वतः वरण करती है ॥१३०॥

(१३१)

नियन्त्रण-रेखा में घुसे, पाक-सैनिक अज्ञ ।
गोलाबारी बम डाले, "शरण" हैं हतप्रज्ञ ॥

अविवेकी पाकिस्तान--सैनिकों ने भारत की कारगिल क्षेत्रीय नियन्त्रण--रेखा में प्रवेश करके गोलाबारी तथा सामरिक विमानों द्वारा बमों का प्रयोग करके भारत को अत्यन्त क्षति पहुँचाई है, यथार्थ में वे बुद्धिहीन अत्याचार परायण तथा सर्वथा प्रथभ्रष्ट हैं ॥१३१॥

(१३२)

भारत अद्भुत वीरों ने, लिया बुद्धि से काम ।
प्रत्युत्तर में अस्त्र चले, "शरण" पाक बेकाम ॥

भारत के अद्भुत उत्तम वीरों ने बड़ी कुशाग्रबुद्धि से कार्य किया, इन्होंने प्रत्युत्तर में अपने प्रबल अस्त्रों से पाकिस्तान की सेना को बेकाम बना दिया, यह भारत के वीरों का महापराक्रम है जो पूर्व सुनियोजित पाक--सेना को विफल कर दिया ॥१३२॥

(१३३)

प्रान्त-प्रान्त के वीरों ने, समर किया अतिघोर ।
राजस्थान वीर-वरेण्य, "शरण" वीर-शिरमोर ॥

यद्यपि भारत के विभिन्न प्रान्तों के वीरों ने भीषण--युद्ध करके पाक--सेना को विचलित कर दिया है तथापि राजस्थान प्रान्त के विशेषतः क्षत्रीय--वीरों एवं जाट समुदाय आदिक वीरों ने भी जो भीषणतम युद्ध करके अनेकों ने अपने देश के प्रति अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया है उनके पावन गौरव का वर्णन करने में लेखनी सर्वथा असमर्थ है । वे वीर हमारे देश के शिरमोर तथा सर्वदा समादरणीय हैं ॥१३३॥

(१३४)

राजस्थान की वीर-भू, वीर-प्रसविनी सिद्ध ।
जिसके प्रबल प्रताप से, "शरण" स्वदेश प्रसिद्ध ॥

राजस्थान की वीर--वसुन्धरा जो वीरों को जन्म देने वाली है जिसका स्वतः सिद्ध गौरव सर्वदा प्रतिष्ठित है । जिसके प्रबल प्रताप से अपना भारतदेश विश्वविख्यात एवं परम गौरवान्वित है । ऐसे राजस्थान एवं यहाँ की महिमामयी वसुधा को तथा यहाँ के वरेण्य वीरों को सतत सर्वात्मना अभिवन्दन है ॥१३४॥

(१३५)

श्रीकृष्ण-बलराम का, श्रीयुत हनुमत-लाल ।
समर-अवनि पर ध्यान हो, 'शरण' सफल तत्काल।।

वीर योद्धागण सबसे प्रथम भगवान् श्रीकृष्ण और हलधर श्रीबलराम तथा श्रीरामभक्त पवनतनय श्रीहनुमान्जी का अपने मन में अच्छी प्रकार ध्यान करके तब युद्ध क्षेत्र में जावें, इनकी कृपा से निश्चय ही तत्काल सफलता प्राप्त होगी । ये करुणावरुणालय दयार्णव अवश्य ही अपने शरणापन्न भक्तों पर कृपा कर ही देते हैं ।।१३५।।

(१३६)

धन्यवाद उन वीरों को, धन्यवाद उन मात ।
धन्यवाद उस क्षेत्र को, "शरण" स्मरण प्रभात ।।

उन वीरों को धन्यवाद है, जिन्होंने स्वदेश हितार्थ नानाविध प्रकार से विपुल कष्ट सहे, कितने ही आहत हो गये तो बहुतों ने अपने अमूल्य प्राणों की आहुति समर्पण करदी । ऐसे उन वीरों के माता--पिता तथा पूरे परिवार को धन्यवाद है जिनके घर में वे प्रकट हुए । ऐसे वीरों ने देश के प्रति सर्वस्व न्यौछावर कर दिया । धन्यवाद उस क्षेत्र को है जहाँ इन्होंने जन्म लेकर वहाँ के गौरव को बढ़ाया । एवंविध ये वीर सदा के लिए अभिवन्दनीय बन गये ।।१३६।।

(१३७)

देश-भावना मानस में, वीरों के प्रति भाव ।
रहे प्रतिष्ठित पूर्णतः, "शरण" यही सुझाव ।।

भारत के यावन्मात्र समस्त जन--जन के मानस में देश के प्रति तथा वीरों के प्रति सुन्दर सद्भाव पूर्णरूप से विद्यमान हो, जागृत हो, ऐसी ही मंगलमयी हार्दिक अभिकामना है ॥१३७॥

(१३८)

पाक-देश को हे प्रभो !, करैं विवेक प्रदान ।
व्यर्थ युद्ध यदि छोड़दे, "शरण" मिलै सन्मान ॥

हे प्रभो ! इस पाकिस्तान प्रदेश को सद्-विवेक प्रदान करें जिससे वह युद्ध जैसा महाअनर्थकारी कार्य को विराम करदे । युद्ध से उभयपक्षीय हानि है, यदि वह युद्ध को स्थगित करदे तो उसका मान ही बढेगा और स्वयं भी अकल्पनीय हानि से बचेगा ॥१३८॥

(१३९)

वही राष्ट्र अतिश्रेष्ठ है, रहे सर्वदा शान्त ।
उत्तम-पथ में अग्रसर, "शरण" कभी न क्लान्त ॥

वही राष्ट्र सबसे अतीव श्रेष्ठ है जो निरन्तर शान्ति एवं सद्भाव से रहे, अकारण संघर्ष में कदापि न पड़े, सर्वदा उत्तम कार्यों की प्रगति करने में आगे हो । वस्तुतः ऐसा राष्ट्र कभी भी संकटापन्न स्थिति में नहीं आता ॥१३९॥

(१४०)

ज्ञान-विज्ञान-शास्त्रविद्, भारत राष्ट्र महान् ।
उसका आदर सब करैं, "शरण" प्रचुर प्रमान ॥

हमारा यह महान् भारत--राष्ट्र अनन्त ज्ञान--विज्ञान से परिपूर्ण शास्त्रों का परिज्ञाता है । इस विशाल देश का सभी परराष्ट्र सश्रद्ध समादर करते हैं जिसके अनेक उदाहरण, प्रमाण हैं ॥१४०॥

(१४१)

भारत के उन वीरों का, वीर-मात का मान ।
करैं हृदय से भाव भर, "शरण" श्रेष्ठ मतिमान ॥

भारत निवासी जन समुदाय का एवं भारत के प्रशासकों का यह परम पावन कर्तव्य है कि वे उन वीरों का जिन्होंने अपने राष्ट्र के प्रति सब कुछ अर्पित कर दिया उनका तथा उनकी मातृशक्ति का सर्वदा सम्मान--प्रतिष्ठा के साथ तदर्थ अपनी अर्थादि अपेक्षित सेवा समर्पित कर अपने को सौभाग्यशाली मानें ॥१४१॥

(१४२)

पुनि-पुनि वीर-गाथा को, सुनकर है उत्कर्ष ।
किया वरेण्य-वीरों ने, "शरण" तीव्र संघर्ष ॥

देश--सुरक्षा हित जिन्होंने तीव्रतम संघर्ष किया ऐसे परम--वरेण्य--वीरों की अत्यन्त प्रेरणाप्रद कथा--प्रसङ्गों को बार-बार सुन पढकर अपने देश के उत्कर्ष--गौरव का अनुभव किया है । वस्तुतः प्रस्तुत प्रसङ्ग समस्त भारतीयजन के लिये अतीव उत्प्रेरक है ॥१४२॥

(१४३)

न वैदुष्य कवित्व है, सर्वेश्वर हिय धार ।
भारत-वीर-गौरव का, "शरण" सूक्ष्म-विचार ॥

न तो वैदुष्य और न कवित्व ही है, केवल एकमात्र सर्वेश्वर श्रीराधामाधव प्रभु का हृदय से चिन्तन--स्मरण कर इस लघु--रूपात्मक **भारत--वीर--गौरव** ग्रन्थ की साधारण संक्षिप्त भावसुमनाञ्जलि यहाँ प्रस्तुत है ॥१४३॥

(१४४)

रचना-लेखन जो स्खलन, उसे सुधारें आप ।
राधासर्वेश्वरशरण सर्वेश्वरप्रभु - जाप ।।

रचना--लेखन--वर्णन आदि में जहाँ स्खलन अर्थात् त्रुटि आदि प्रतीत हों उसका आप ही अपने सौजन्य भाव से सुधार कर व्यवस्थित करलें । अपने इस सामान्य स्वल्प जीवन में परमाराध्य सर्वेश्वर श्रीराधामाधव प्रभु के मंगलमय नामों का यत्किञ्चित् भी जाप एवं उनकी ललित--लीलाओं का यदि स्वकीय मानस में कदाचित् तत्कृपाजन्य संस्फुरण हो जाय तो परम सौभाग्य है ।

सर्वदा स्मरणीय--

(१)

श्रीवाल्मीकि - व्यास ने, किया वाग्-विस्तार ।
देश-प्रतिष्ठा अभिनिरत, "शरण" राष्ट्र-आधार ॥

(२)

समस्त वैष्णवाचार्य, शङ्कराचार्य महान ।
स्वदेश हित सर्वस्व भी, "शरण" दिया शुभ-ज्ञान ॥

(३)

निम्बार्काचार्यवर, चक्रराज अवतार ।
द्वैताद्वैत स्वाभाविक, "शरण" विहित श्रुतिसार ॥

(४)

राधाकृष्ण-उपासना, निम्बग्राम निवास ।
गोवर्धन व्रजधाम भुवि, "शरण" निम्बारक भास ॥

(५)

निम्बार्कपीठाधीश्वर, भवविश्रुत - आचार्य ।
जगद्गुरु अथ भाष्यकार, "शरण" हृदय अवधार्य ॥

(६)

श्रीमत्केशवकाश्मीरि, - भट्टाचार्य प्रसिद्ध ।
यवनतान्त्रिक का किया, "शरण" शमन श्रुतिसिद्ध ॥

(७)

श्रीश्री भट्टाचार्यवर, श्रीहरिव्यासदेव ।
जगद्गुरु जग प्रसिद्धतम, "शरण" युगलवर सेव ॥

(८)

परशुरामदेवाचार्य, निम्बार्कपीठाधीश ।
स्वदेश-शत्रु परिशमन, "शरण" किया स्मर-ईश ॥

(६)

सूर - तुलसीदास ने, जो दिया सन्देश ।
सुर - वाणी रामायण, "शरण" सुपथ स्वदेश ॥

(१०)

कबीर - मीरा सुप्रसिद्ध, तथा सन्त रैदास ।
तुकाराम-नामदेव, "शरण" स्वेष्ट-आभास ॥

(११)

नरसीमेहता-एकनाथ, ज्ञानेश्वर शुभ नाम ।
श्रीहरि-आश्रित हो सदा, "शरण" भजन निष्काम ॥

(१२)

समस्त - नारी जगत में, व्रजदासी विख्यात ।
बीस-सहस्रतम छन्दबद्ध, "शरण" भागवत-बात ॥

(१३)

श्रीमत्सांवतसिंहजी, किशनगढ़ - महाराज ।
श्रीनागरीदास - नाम, "शरण" प्रसिद्धतम आज ॥

(१४)

अतिशय वीरवरेण्य थे, भावुक भक्त प्रसिद्ध ।
राधाकृष्ण-समुपासक, "शरण" भक्तिरससिद्ध ॥

(१५)

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, अधीश्वर - महाराज ।
वृन्दावनदेवाचार्य, "शरण" राज-अधिराज ।।

(१६)

इन श्रीआचार्यवर्य के, शिष्य नागरीदास ।
श्रीवृन्दावन धाम नित "शरण" किया व्रजवास ।।

(१७)

व्रज - निवास से पूर्व जब, कृष्णदुर्ग - अधिराज ।
आज्ञा ले आचार्यश्री, "शरण" युद्ध वनराज ।।

(१८)

सागरमाला-सुभग-वन, गो-हिंसा-रत शेर ।
उसे एकाकी युद्ध कर, "शरण" तुरत हत टेर ।।

(१९)

सांवतसिंह पराक्रमी, भक्तवीर अतिधीर ।
वृन्दावन निवसत सदा, "शरण" तरणिजा-तीर ।।

(२०)

विविध ग्रन्थ के रचयिता, राधामाधव ध्यान ।
परम रसिक व्रजकुञ्जनिष्ठ, "शरण" अनन्य अमान ।।

(२१)

श्रीमन्नागरीदासजी, अतुलित वैभव त्याग ।
वीरवर अथ रसिकभक्त, "शरण" लिया विराग ।।

(२२)

ऐसे वीर महारथी, युगल भक्ति रसलीन ।
जय-जय इनकी सतत हो, "शरण" कवीश प्रवीन ॥

(२३)

बंकिमचन्द्रचटर्जी ने, किया राष्ट्र का गान ।
प्रसिद्ध वन्दे मातरम्, "शरण" श्रेष्ठतम मान ॥

(२४)

मैथिलीशरण गुप्त ने, किया विवेक अवदान ।
भारत-भारती ग्रन्थ में, "शरण" राष्ट्र सम्मान ॥

(२५)

राष्ट्रपति राधाकृष्णन, वेदविज्ञ अतिधीर ।
गौरव बढ़ाया देश का, "शरण" दार्शनिक-वीर ॥

(२६)

राजगोपालाचार्य, नीतिकुशल प्रख्यात ।
स्वदेश-सत्पथ अभिदर्शक, "शरण" विश्वख्यिात ॥

(२७)

वीर - सम्पदा देश की, गौरव - गरिमा पूर्ण ।
यही गर्व निज देश को, "शरण" कभी न अपूर्ण ॥

(२८)

आजाद चन्द्रशेखर ने, रखा देश का मान ।
तन को अर्पण कर दिया, "शरण" अमित गुण गान ॥

(२९)

लालबहादुर शास्त्री ने, लिया नीति से काम ।
पाक शक्ति को हत किया, "शरण" पूर्ण बल धाम ॥

(३०)

श्रीइन्दिरागान्धी ने, किया पाक वेकाम ।
अपने तन को देश हित, "शरण" समर्पित धाम ॥

(३१)

गुलजारीलाल नन्दाजी, धर्मनिरत गोभक्त ।
देश-सेवा परम-निष्ठ, "शरण" सतत अनुरक्त ॥

(३२)

संजय--राजीव गाँधी ने, किया देश उपकार ।
स्वकीय तन को तज दिया, "शरण" कार्य विस्तार॥

(३३)

सन्त - विनोवा भावे ने, गोरक्षा तन त्याग ।
देश हित जीवन दिया, "शरण" श्रेष्ठतम भाग ॥

(३४)

देश - भक्त अथ वीरों का, साहस परम महान ।
वर्णन करना अशक्य हैं, "शरण" शान का ध्यान॥

(३५)

भक्त-सुधी-साधु-धनी, दीन-बली अथ वीर ।
राष्ट्र-रक्षा हित कटिबद्ध, "शरण" हरत सब पीर ॥

(३६)

वीर भोग्या वसुन्धरा, कथित उक्ति चरितार्थ ।
वीर-शौर्य-नैपुण्य-बल, "शरण" स्वदेश हितार्थ ।।

(३७)

अद्भुत - साहस धीरता, अद्भुत पावन कार्य ।
अद्भुत-शौर्य सम्पन्नता, "शरण" यही अनिवार्य ।।

(३८)

उत्तम श्रेष्ठ जीवन हो, उत्तम सुभग विचार ।
उत्तम श्रीहरि भगति हो, "शरण" पूर्णतम सार ।।

(३९)

पावन जीवन सुपथ हो, पावन सुन्दर कर्म ।
पावन सेवा देश की, "शरण" यही है धर्म ।।

(४०)

अगणित वीर यहाँ हुये, सन्त-भक्त गुणवान ।
जिन शुभ सुयश अपार है, "शरण" अमित बलवान ।।

(४१)

विविध वीर नामावली, हुआ न यहँ उल्लेख ।
समस्त नित स्मरणीय हैं, "शरण" सदा हिय देख ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री श्रीजी महाराज

द्वारा विरचित--

✻ ग्रन्थमाला ✻

		प्रकाशित	श्लोक सं.
१.	श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातः स्वतवराज पर (युग्मतत्त्व प्रकाशिका) नामक संस्कृत व्याख्या	,,	
२.	श्रीयुगलगीतिशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	११८
३.	उपदेश-दर्शन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
४.	श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु (पद सं. १३२)	,,	
५.	श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	३६५
६.	श्रीराधामाधवशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०५
७.	श्रीनिकुञ्ज-सौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	५८
८.	हिन्दु संघटन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
९.	भारत-भारती-वैभवम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१३५
१०.	श्रीयुगलस्तवविंशतिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१८६
११.	श्रीजानकीवल्लभस्तवः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	४०
१२.	श्रीहनुमन्महिमाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	२२
१३.	श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१५
१४.	भारत-कल्पतरु (पद सं० १४६)	,,	
१५.	श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	६५
१६.	विवेक-वल्ली (पद सं० ४१६)	,,	
१७.	नवनीतसुधा (संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
१८.	श्रीसर्वेश्वरशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०८
१९.	श्रीराधाशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०३

	प्रकाशित	श्लोक सं.
२०. श्रीनिम्बार्कचरितम् (संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
२१. श्रीवृन्दावनसौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	६०
२२. श्रीराधासर्वेश्वरमंजरी (पद सं. ६४-दोहा सं. ६२)	,,	
२३. श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम् (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (पद सं० २०)	,,	१०
२४. छात्र-विवेक-दर्शन (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं० २४१)	,,	
२५. भारत-वीर-गौरव (हिन्दी-पद्यात्मक दोहा सं.१८१)	,,	
२६. श्रीराधासर्वेश्वरालोकः (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं० ३२)	,,	१७
२७. श्रीपरशुराम-स्तवावली (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं० ४६, पद सं० ६)	,,	२७
२८. श्रीराधा-राधना (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (पद सं० २८, दोहा सं० ५१)	,,	५६
२६. मन्त्रराजभावार्थ-दीपिका (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१८
३०. आचार्यपञ्चायतनस्तवनम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	३५
३१. श्रीराधामाधवरसविलास, महाकाव्य (दोहा सं० १०५३)	,,	
३२. गोशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) (दोहा सं० ६३, पद सं० १४)	,,	१३५
३३. श्रीसीतारामस्तवादर्शः (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं० १०१, पद सं० १६)	,,	८०
३४. श्रीमाधवशरणापत्तिस्तोत्रम्	अप्रकाशित	६३

कुल हिन्दी पद सं० २७०२ | कुल श्लोक सं० १८५४

श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्य, चक्रचूडामणि, सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र,
द्वैताद्वैतप्रवर्तक, यतिपतिदिनेश, राजराजेन्द्रसमभ्यर्चितचरणकमल,
भगवन्निम्बार्काचार्यपीठविराजित, अनन्तानन्त श्रीविभूषित -

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ,
श्रीनिम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज का जन्म विक्रम संवत् 1986 वैशाख शुक्ल 1 शुक्रवार तदनुसार दिनांक 10 मई 1929 को निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में हुआ। आपकी माताश्री का नाम स्वर्णलता (सोनीबाई) एवं पिताश्री का नाम श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया था। आप जैसे नक्षत्रधारी महापुरुष के जन्म से यह विप्र वंश धन्य हुआ है। आपश्री 11 वर्ष की अल्पावस्था में वि.सं. 1997 आषाढ़ शुक्ल 2 रविवार (रथयात्रा) के शुभावसर पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज से वैष्णवी दीक्षा से दीक्षित होकर आचार्य पीठ के उत्तराधिकारी नियुक्त हुए। वि.सं. 2000 में पूज्य गुरुदेव के गोलोकवास होने पर 14 वर्ष की अवस्था में ज्येष्ठ शुक्ल 2 शनिवार दिनांक 5 जून 1943 को आचार्यपीठ पर आसीन हुए। तदनन्तर 4 वर्ष तक श्रीधाम वृन्दावन में न्याय-व्याकरण-वेदान्त आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। व्रजविदेही चतुः सम्प्रदाय श्रीमहान्त श्रीधनञ्जयदासजी काठिया बाबा महाराज तर्क-तर्कतीर्थ जैसे महानुभावों का आपको संरक्षण प्राप्त हुआ। आपश्री के आचार्यत्वकाल में वैष्णव चतुःसम्प्रदायों के आचार्यों, श्रीमहन्तों, सन्त-महात्माओं, समस्त शंकराचार्यों, श्रीकरपात्रीजी महाराज, महामण्डलेश्वरों, देश के मूर्धन्य मनीषियों, राजा-महाराजाओं,

राजनेताओं के साथ निकटतम घनिष्ठ सम्पर्क बढ़ा। श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का चतुर्दिक् विस्तार हुआ। वि.सं. 2001 में आपश्री ने 15 वर्ष की अवस्था में कुरुक्षेत्र के विराट् साधु सम्मेलन में जगद्गुरु पुरीपीठाधीश्वर श्रीभारतीकृष्णातीर्थजी महाराज के तत्त्वावधान में अध्यक्ष पद को अलंकृत किया।

आपश्री के कार्यकाल में श्रीनिम्बार्काचार्य स्पेशल ट्रेन द्वारा तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा सम्पन्न हुई। प्रयाग, हरिद्वार, (वृन्दावन) उज्जैन, नासिक इन चारों स्थानों के कुम्भ पर्वों पर अनेकशः श्रीनिम्बार्कनगर में समायोजित धार्मिक अनुष्ठानों, धर्माचार्यों के सदुपदेशों, विविध सम्मेलनों द्वारा समग्र जन समुदाय को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया जाता रहा है। इसी प्रकार सं. 2026 में व्रजयात्रा, 2031 में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2047 में श्रीमुरारी बापू की रामकथा, 2050 में स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर अ. भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन आदि आयोजनों द्वारा जो धार्मिक चेतना जन-जन में स्फुरित करायी गयी वह सदा स्मरणीय है। प्रत्येक अधिकमास में आचार्यपीठ पर आयोजित होने वाले अष्टोत्तरशतभागवत, यज्ञानुष्ठान, प्रवचन, श्रीरासलीलानुकरण, श्रीरामलीला आदि कार्यक्रम भी सदा प्रेरणाप्रद रहते हैं। आप द्वारा प्रतिदिन किया जाने वाला श्रीयुगलनाम-संकीर्तन भी श्रवणीय होता है। सन् 1966 में दिल्ली के विराट् गो-रक्षा सम्मेलन में आपश्री का सपरिकर पादार्पण हुआ था। इस अवसर पर स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं अन्य धर्माचार्यों से जो विचार विमर्श हुआ वह परम ऐतिहासिक है।

आपश्री ने अपने आचार्यत्व काल में जितना देश-देशान्तरों में सम्प्रदाय का वर्चस्व बढाया है उतना ही देवालयों के निर्माण, जीर्णोद्धार, शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण-सञ्चालन, साहित्य प्रकाशन, नूतन ग्रन्थ रचना, गोशाला, मुद्रणालय आदि संस्थाओं द्वारा आचार्यपीठ का सर्वतोभावेन विकास किया है। आपश्री द्वारा रचित भारत-कल्पतरु ग्रन्थ का विमोचन भारत के उपराष्ट्रपति डॉ. श्रीशंकरदयालजी शर्मा ने दिल्ली में किया था। इसी प्रकार आपके अन्य ग्रन्थों का मूर्द्धन्य राजनेताओं, शीर्षस्थ महापुरुषों, जगद्गुरुओं द्वारा विमोचन समारोह सम्पन्न हुये हैं एवं आप द्वारा प्रणीत रचनाओं पर तीन-चार शोधप्रबन्ध भी प्रस्तुत हुए हैं जो मननीय हैं, आप द्वारा रचित ३५ ग्रन्थ हैं। अस्वस्थ अवस्था में भी आपश्री निरन्तर क्रियाशील रहते हैं। आपश्री का संरक्षण पाकर और आपश्री के महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय किंवा सनातन धर्म जगत् विशेषतः उपकृत हुआ है। आपके मधुर दर्शन की एक झलक पाने और वचनामृत सुनने के लिए धार्मिक जन सदा समुत्सुक रहते हैं।

Printed at : Print 'O' Land, Jaipur • 2212694